जीवन है अनमोल

-डॉ. चंचलमल चोरडिया

बच्चों को सुसंस्कारित करने, विद्यार्थियों को जीवन के अमूल्य समय, श्रम एवं क्षमताओं का बोध कराने तथा वृद्धों में मृत्यु को महोत्सव बनाने की कला सिखाने की प्रेरणा देने वाले आध्यात्मिक पुरुषों द्वारा रचित कर्त्तव्य बोध कराने वाले भजनों का संकलन है:-

''जीवन है अनमोल''

इन भजनों को जब कभी और जिस किसी के द्वारा गुनगुनाया अथवा सुना जायेगा उससे सम्बन्धित व्यक्ति के अशुभ विचार शुभ होने लगेंगे और नकारात्मक सोच सकारात्मक होने से जीवन में शुद्ध आत्मिक चेतना संचार होने लगेगी। माता-पिता एवं उपकारी संत मुनिराजों के प्रति अहोभाव, स्वयं की अनन्त क्षमताओं से साक्षात्कार, नर से नारायण और भक्त से भगवान बनने की कला समझ में आ जाएगी।

प्रकाशक

कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर

चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 0291-2621454 (R), फैक्स: 2435471, मोबाइल: 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealth.com

सहयोग राशि 20/-

प्यारे परदेशी पंछी

(तर्ज:- नगरी-नगरी, द्वारे-द्वारे.....।)

ओ प्यारे परदेशी पंछी, जिस दिन तूं उड़ जाएगा।
तेरा प्यारा पिंजरा पीछे, यहाँ जलाया जाएगा।। टेर।।

जिस पिंजरे को सदा सभी ने, पाला पोसा प्यार से,
खूब खिलाया, खूब पिलाया, हरदम रखा सम्भाल के।
तेरे होते-होते नीचे, इसे सुलाया जाएगा।।
ओ प्यारे परदेशी पंछी..... ।। 1 ।।

देखे बिना तरसती आँखें, रहना चाहती साथ में,
तेरे बिना ना खाती खाना, तूं ही था हर बात में।
तेरे पूछे बिना ही सारा, काम चलाया जाएगा।।
ओ प्यारे परदेशी पंछी..... ।। 2 ।।

रोयेंगे थोड़े दिनों तक, भूलेंगे फिर बाद में,
ज्यादा से ज्यादा इतना कुछ, करवा देंगे याद में।
हलवा पूरी खाकर तेरा, श्राद्ध मनाया जाएगा।।
ओ प्यारे परदेशी पंछी..... ।। 3 ।।

तुझे पता है क्या कुछ होगा, फिर भी क्यों नहीं सोचता,
मूर्ख वह दिन भी आएगा, पड़ा रहेगा सोचता।
जन्म अमोलक खोकर हीरा, पीछे से पछताएगा।।
ओ प्यारे परदेशी पंछी..... ।। 4 ।।

अर्थी उठने से पहले हम अपने जीवन के अर्थ को समझ लें। अस्थियाँ बिखरने से पहले अपने जीवन में आस्था जगा लें। प्रत्येक अर्थी हमारे लिये एक सबक है। किसी की चर्बी को देखकर सोचों, एक दिन ऐसे ही संसार से मुझे जाना है। अपने आपका नियमित स्वाध्याय करें। जीवन एवं मृत्यु का स्वाध्याय ही जिन्दगी का असली स्वाध्याय है। जीवन एक यात्रा है, एक पड़ाव है। प्रत्येक मनुष्य के लिए मृत्यु सबसे बड़ा उपदेशक है। मृत्यु अपने व पराये को पहचानने की कसौटी है। नियमित, अनित्य एवं मृत्यु का चिंतन और आत्मा की शाश्वता का बाँध ही व्यक्ति को पापों एवं कर्म बंधनों से बचा सकता है।''

1. नर नारायण बन जायेगा

नर नारायण बन जायेगा, जो आत्म ज्योति जगाएगा
नर नारायण बन जायेगा.....।।(2)

कर्मों के बंधन टूटेंगे, पापों के बन्धन टूटेंगे,
विषयों के नाते छूटेंगे, जो सोया सिंह जगाएगा।
नर नारायण बन जायेगा.....।।

घट में बैठा एक ईश्वर है, जाने माने ज्ञानेश्वर है,
जाने माने परमेश्वर है, सब जन्म-मरण मिट जायेगा।
नर नारायण बन जायेगा.....।।

बादल के पीछे दिनकर है, कर्मों के पीछे ईश्वर है।
जो सर्व ही ज्योति जगायेगा।
नर नारायण बन जायेगा.....।।

गुरु के चरणों में जाकर के, श्रद्धा के सुमन चढ़ाकर के।
मुनि 'कुमुद' जो आनन्द पायेगा।
नर नारायण बन जायेगा.....।।

2. भावना दिन रात मेरी

भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का, व्यवहार बारम्बार हो।।

धर्म के विस्तार से, संसार का उद्धार हो।
पाप का परित्याग हो, और पुण्य का संचार हो।।

ज्ञान की सद् ज्योति से, अज्ञान तम का नाश हो।
धर्म के सद् आचरण से, शान्ति का आभास हो।।

शान्ति सुख आनन्द का, प्रत्येक घर में वास हो।
वीर वाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो।।

रोग, भय और शोक होवे, दूर है परमात्मा।
ज्योति से परिपूर्ण होवे, सब जगत की आत्मा।।

प्रार्थना एक आध्यात्मिक व्यायाम है। शारीरिक व्यायाम से शरीर पुष्ट होता है एवं अनावयक चर्बी कम होती है, उसी प्रकार प्रार्थना हमारे जीवन में बुराईयों को दूर कर सात्त्विक, सकारात्मक, सम्यक् चिन्तन-मनन को विकसित करती है। अत: प्रार्थना अन्त:करण की शुद्धि करती है।

3. भावभीनी वन्दना

भावभीनी वन्दना, भगवान चरणों में चढ़ाएँ।
शुद्ध ज्योर्तिमय निरामय, रूप अपने आप पायें।।

ज्ञान से निज को निखारें, दृष्टि से निज को निहारें।
आचरण की उर्वरा में, लक्ष्य तरुवर लह लहलहायें।।

सत्य में आस्था अचल हो, चित्त संशय से न चल हो।
सिद्ध कर आत्मानुशासन, विजय का संगान गाएँ।।

बिन्दु भी हैं, सिंधु भी हैं, भक्त भी, भगवान भी हैं।
छिन्न कर सब ग्रन्थियों को, सुप्त मानस को जगायें।।

धर्म है समता हमारा, कर्म समतामय हमारा।
साम्य योगी बन हृदय से, स्रोत समता का बहावें।।

4. मैत्री भाव का पावन झरना

मैत्री भाव का पावन झरना, मेरे हृदय से बहा करें।
मंगल होवे सकल विश्व का, ऐसी भावना बनी रहें।।

गुण से पुरण गुणी जन देख के, हर्ष भरा मन नृत्य करें।
उन संतों के चरण कमल में, गुण ग्रहण का भाव रहें।।

दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहें।
करुणा पूरण आँखों में से, अश्रु का शुभ स्रोत बहें।।

भव अटवी में भूले भटके, जीवों का पथ दीप बनूं।
करे उपेक्षा उस मानव की, तो भी समता चित्त धरूं।।

निर्मल भावना मुक्ति पथ की, मानव जीवन में लाऊँ।
वैर जहर का भाव छोड़, जग नित्य नये मंगल गाएँ।।

दुनिया के चराचर जीवों पर, कर्मों ने जाल बिछाया है,
क्या साधु गृहस्थ क्या बाल वृद्ध, बस कोई न बचने पाया है।
अति शुभ कर्मों के आने से, संतों का समागम मिलता है
जिनवाणी श्रवण करने से, दुःख जन्म-मरण का मिटता है।।

5. अवगुण छोड़ो, गुणों का अब

अवगुण छोड़ो, गुणों का अब, ज्ञान कर लो।
धीरे-धीरे अपने को गुणवान कर लो।।टेर।।

एक दिन में गुणी न बना जाता, बीज बोते ही फल कब लग जाता।
धीरता का, सुधारस पान कर लो।।

धीरे धीरे अपने.....।

संग छोड़ो जो दुर्गुण सिखलाते , सीधे रास्ते में सबको भटकाते।
गुण-अवगुण की अब, पहचान कर लो।।

धीरे धीरे अपने.....।

आप सुधरे तो जग सुधरा करता, दीप खुद हो प्रकाशित तम हरता।
दीप हो तुम, औरों को दीप्तिमान कर दो।।

धीरे धीरे अपने.....।

गहरे उतरोगे मोती पाओगे, तट से कंकर उठा धर लाओगे।
बुद्ध हो तुम, औरों को बुद्धिमान कर लो।।

धीरे धीरे अपने.....।

6. सत्संगत से सुख मिलता है

सत्संगत से सुख मिलता है, जीवन का कण-कण खिलता है।।टेर।।

सत्संगत से सद्ज्ञान मिले, सत्संगत से भगवान् मिले।
पानी से पौधा फलता है, सत्संगत से सुख मिलता है।।1।।

सत्संगत से वैराग्य बढ़े, सत्संगत से सौभाग्य बढ़े।
दीपक से दीपक जलता है, सत्संगत से सुख मिलता है।।2।।

नास्तिक भी आस्तिक बन जाता, पापी भी पावन हो जाता।
चाबी से ताला खुलता है, सत्संगत से सुख मिलता है।।3।।

कपड़े को जैसा रंग मिले, मानव को जैसा संग मिले।
बसी उसी ढाल में ढ़लता है, सत्संगत से सुख मिलता है।।4।।

लाखों का भाग्य जगाया है, लाखों को पार लगाया है।
सत्संग से सिद्धि मिलती है, सत्संगत से सुख मिलता है।।5।।

हम जो भी कार्य करें, उसमें हमको सफल भी होना है। ऐसा न हो कि हमारा समय और श्रम विफल हो। योजनाबद्ध ढंग से कार्य करने पर अवश्य सफलता मिलती है। सेना युद्ध में जीतने से ही सम्मानित होती है।

7. यदि भला किसी का कर न सको.... ।

यदि भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना।
अमृत न पिलाने को घर में तो, जहर पिलाते भी डरना।। टेर।।

यदि सत्य मधुर न बोल सको, तो झूठ कपट भी मत बोलो।
यदि मौन रखो सबसे अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो।
बोलो तो पहले तुम तोलो, फिर मुख ताला खोला करना।
यदि भला किसी का .....।।

यदि घर न किसी का बना सको तो, झोंपड़ियाँ न जला देना।
यदि मरहम पट्टी कर न सको तो, घाव नमक न लगा देना।
यदि दीपक बनकर जल न सको, तो अंधकार भी मत करना।
यदि भला किसी का .....।।

यदि फूल नहीं बन सकते तो, काँटे बनकर न बिखर जाना।
मानव बनकर सहला न सको तो, दिल भी किसी का दुखाना
यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बनकर भी मत मरना।
यदि भला किसी का .....।।

मुनि पुष्प अगर भगवान नहीं तो, कम से कम इन्सान बनो।
किन्तु न कभी शैतान बनो और कभी न तुम हैवान बनो।
यदि सचाचार अपना न सको, तो पापों में पग मत धरना।
यदि भला किसी का .....।।

8. प्रभु तुम्हारे पावन पथ पर

प्रभु तुम्हारे पावन पथ पर, जीवन अर्पण है सारा।
बढ़ें चलें हम, रूकें न क्षण भी, होवे दृढ़ संकल्प हमारा।।

प्राणों की परवाह नहीं है, प्रण को अटल निभायेंगे।
नहीं अपेक्षा है औरों की, स्वयं लक्ष्य को पायेंगे।
एक तुम्हारे ही वचनों का, भगवन प्रतिपल सबल सहारा।।
प्रभु तुम्हारे पावन.....।।

ज्यों-ज्यों चरण बढ़ेंगे आगे, स्वतः मार्ग बन जायेगा।
रुकना होगा उसे बीच में, जो बाधक बन आयेगा।
रुक न सकेगी, मुड़ न सकेगी, सत्य क्रांति की उज्ज्वल धारा।
प्रभु तुम्हारे पावन.....।।

आत्म शुद्धि का जहाँ प्रश्न हों, संप्रदाय का मोह न हों।
चाह न यश की ओर न किसी से, ना कोई विद्रोह न हों।
स्वर्ण विघर्षण से ज्यों सत्य, निखरता संघर्षों के द्वारा।।
प्रभु तुम्हारे पावन.....।।

आग्रह हीन गहन चिंतन का, मार्ग हमेशा खुला रहे।
कण-कण में आदर्श हमारे, पय मिश्री ज्यों घुला रहे।
जागे स्वयं जगायें जग को, हो यह सफल हमारा नारा।।
प्रभु तुम्हारे पावन.....।।

नया मोड़ है उसी दिशा में, नई चेतना फिर जागे।
तोड़ गिरायें जीण-शीर्ण जों, अंध रुढ़ियों के धागे।
आगे बढ़ने का युग है, बढ़ना हम को सबसे प्यारा।।
प्रभु तुम्हारे पावन.....।।

शुद्धाचार विचार भीति पर, अब हम नव निर्माण करें।
सिद्धान्तों को अटल निभाते, निज पर का कल्याण करें।
इसी भावना से भिक्षुक का, तुलसी चमका भाग्य सितारा।।
प्रभु तुम्हारे पावन.....।।

9. चेतन चिदानंद चरणों में

चेतन चिदानंद चरणों में सब कुछ अर्पण कर थारो।
सफल बना तूं सत्संगत में, मूंगा मोलो मिनख जमारो।।

खाली हाथाँ आयो रे चेतन, जासी खाली हाथाँ रे।
लारे रहसी इण दुनियाँ में, यश-अपयश री बाताँ रे।
थोड़े से जीने रे खातिर, क्यों बांधे सिर पाप रो भारों।।
चेतन चिदानंद चरणों में.....।

कोड़ियाँ साथे अहल हार मत, ओ लाखीणो हीरो रे।
विष मत घोल वासना रो तूं, शांत सुधारस पीणो रे।
अति जीणो परमारथ रे पथ, तूं है नश्वर तन सूं न्यारो।।
चेतन चिदानंद चरणों में.....।

भरयों अनन्त अखूट खजानो, गाफिल थाराँ घर में रे।
क्यूं यूं बाहरे निहारें, क्यों भटके दर-दर में रे।
आग छिपी अरणी में ढूंढें, काट-काट मूरख कठियारों।।
चेतन चिदानंद चरणों में.....।

एक नयो पईसों भी थारे, नहीं चालसी साथे रे।
करियाँ आपरा करमाँ सूं ही, सुख-दुःख मिलसी आगे रे।
संयम रे मारग पर चाल्या, तुलसी निश्चित है निस्तारो।।
चेतन चिदानंद चरणों में.....।

10. यदि चाहो कष्टों से मुक्ति

यदि चाहो कष्टों से मुक्ति, कष्टों का मानों उपकार।
कष्टों से क्या घबराना, ये जीवन के सच्चे उपहार।।

आर्त्तध्यान से कर्म बंध हैं, मिलती नहीं समाधि है।
कर्मो के कारण, ही आधि, व्याधि और उपाधि है।
कर्म उदय में अविचल मन हो, सच्चे सुख है आधार।।
कष्टों से क्या घबराना.....।।1।।

दोष न दें कष्टों में पर को, जो बोया सो पाना है।
पत्थर की ठोकर से क्या, पत्थर में दोष बताना है।
जागृत रहे कर्म बंध में, तो यात्रा होती सुखकार।।
कष्टों से क्या घबराना.....।।2।।

जहर मिला परदेशी को, पर नहीं किया रानी पर रोष।
खंदक जी की खाल उतारी, नहीं निकाला पर में दोष।
गजसुकूमाल मुनि ने माना, सोमिल का सच्चा सहकार।।
कष्टों से क्या घबराना.....।।3।।

दुःख से दुःखी बनोगे तो, नहीं मिलती दुःखों से मुक्ति।
भागों ना समता से भोगों, यही समाधि की युक्ति।
घर आये मेहमान यदि तो, मत करना रोते सत्कार।।
कष्टों से क्या घबराना.....।।4।।

हंसते-हंसते सहना है और सहते -सहते हंसना है।
धूप छांव सम सुख-दुःख में, निर्लिप्त सदा ही रहना है।
''गौतम'' से प्रभु फरमाते हैं, समभावों को लो स्वीकार।।
कष्टों से क्या घबराना.....।।5।।

अपने अपराधों का प्रायश्चित्त करने का मतलब अपराध की सजा स्वयं स्वीकार करना। जो स्वयं के अपराधों की सजा स्वयं ले लेते हैं, उसको दूसरा सजा नहीं दे सकता, अन्यथा छोटे से छोटा व्यक्ति भी हमको हमारे अपराध की सजा दे सकता है।

11. मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूँ

मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूँ।। टेर।।

मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण, पर की मुझमें कुछ गंध नहीं।
मैं अरस, अरुपी, अस्पर्शी, पर से कुछ भी संबंध नहीं।।
मैं ज्ञानानंद..... ।।

मैं रंग राग से भिन्न भेद से, भी मैं भिन्न निराला हूँ।
मैं हूँ अखण्ड चैतन्य पिंड, निज रस में रमने वाला हूँ।।
मैं ज्ञानानंद..... ।।

मैं ही मेरा कर्त्ता-धर्त्ता, मुझमें पर का कुछ काम नहीं।
मैं मुझमें रहने वाला हूँ, पर मैं मेरा विश्राम नहीं।।
मैं ज्ञानानंद..... ।।

मैं शुद्ध-बुद्ध अविरूद्ध एक, पर परिणति से अप्रभावी हूँ।
आत्मानुभूति से प्राप्त तत्व मैं ज्ञानानन्द स्वभावी हूँ।।

12. मेरे अन्तर भया प्रकाश

मेरे अन्तर भया प्रकाश, नहीं अब मुझे किसी की आश,
काल अनन्त, रुला भववन में, बंधा मोह के पाश।
काम-क्रोध, मद-लोभ भाव से, बना जगत का दास।।
मेरे अन्तर भया..... ।

तन, धन, परिजन, सब ही पर है, पर की आश निराश।
पुद्गल को अपना कर मैंने, किया सवत्त्व का नाश।।
मेरे अन्तर भया..... ।

रोग-शोक नहीं मुझकों देते, जरा मात्र भी त्रास।
सदा शांतिमय मैं हूँ, मेरा अचल रुप है खास।।
मेरे अन्तर भया..... ।

इस जग की ममता ने मुझकों, डाला गर्भावास।
अस्थि, मांस, मय अशुचि देह में, मेरा हुआ निवास।।
मेरे अन्तर भया..... ।

ममता से संताप उठाया, आज हुआ विश्वास।
भेद ज्ञान की पैनी धार से, काट दिया वह पाश।।
मेरे अन्तर भया..... ।

मोह मिथ्यात्व की गांठ गले जब, होवे ज्ञान प्रकाश।
'गजेन्द्र' देखे अलख रूप को, फिर न किसी की आश।।
मेरे अन्तर भया..... ।

13. मैं हूँ उस नगरी का भूप

मैं हूँ उस नगरी का भूप, जहाँ नहीं होती छाया धूप,
तारा मंडल की न गति है, जहाँ न पहुँचे सूर।
जगमग ज्योति सदा जगती है, दीसे यह जग कूप।।
मैं हूँ उस नगरी.....।

मैं नहीं श्याम गौर वर्णा हूँ, मैं नहीं सुरूप-कुरूप।
नहीं लम्बा बौना भी मैं हूँ, मेरा अविचल रूप।।
मैं हूँ उस नगरी.....।

अस्थि मांस मज्जा नहीं मेरे, मैं नहीं धातु रुप।
हाथ पैर सिर आदि अंग में, मेरा नहीं स्वरूप।।
मैं हूँ उस नगरी.....।

दृश्य जगत पुद्गल की माया, मेरा चेतन रूप।
पूरण गलन स्वभाव धरे तन, मेरा अव्यय रूप।।
मैं हूँ उस नगरी.....।

श्रद्धा नगरी वास हमारा, चिन्मय कोष अनूप।
निराबाध सुख में झूलूँ मैं, सद्-चित्त आनन्द रूप।।
मैं हूँ उस नगरी.....।

शक्ति का भंडार भरा है, अमल अचल मम रूप।
मेरी शक्ति के सम्मुख नहीं, देख सके अरि भूप।।
मैं हूँ उस नगरी.....।

मैं न किसी से दबने वाला,रोग न मेरा रूप।
'गजेन्द्र' निज पद को पहचाने, सो भूपों का भूप।।
मैं हूँ उस नगरी.....।

देखना चक्षु इन्द्रिय का विषय है, परन्तु उससे क्या देखना और क्या नहीं देखना स्वयं की सजगता, विवेक एवं प्रज्ञा पर निर्भर होता है। आंखें हैं तो बिना देखे तो नहीं रह सकते। देखना आंख का आकर्षण है। परन्तु भौतिक वस्तुओं को देखते रहने से उसमें विकार उत्पन्न होने की संभावना रहती है। देखकर याद करना अथवा प्राप्त करने की भावना करना दृष्टि दोष होता है।

14. अरिहंतों को नमस्कार।

अरिहंतों को नमस्कार, श्री सिद्धों को नमस्कार,
आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार।
जग में जितने साधु गण हैं, मैं सबको वंदू बार बार।।
अरिहंतों को.....।

ऋषभ, अजित, संभव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराज।
चन्द्र पुष्प, शीतल श्रेयांस नमूं, व्रासुपूज्य पूजित सुरराज।
विमल, अनन्त धर्म जश उज्ज्वल, शांति कुंथु अरु मल्लि मनोहर,
मुनिसुव्रत नमि नेमी पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय।
चौबींसों के चरण कमल में, मेरा वन्दन बार-बार।।
अरिहंतों को.....।

जिसने राग-द्वेष का मादिक जीते, सब जग सारा जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरिहर, बह्मा या पेंगम्बर हो अवतार।
सबके चरण कमल में मेरा, वन्दन होवे बार-बार।।
अरिहंतों को.....।

15. आओ भगवन आओ।

आओ भगवन आओ, इस अन्तर मन में आओ।
मेरे जीवन के कण-कण में, बन कर प्राण समाओ।
आओ भगवन आओ.....।

लिया तुम्हारा शरणा है, मोह निराकृत करना है।
इसने मुझको मारा है, तुमने इसे संभाला है।
बनकर निर्देशक इस रण में, मुझकों विजय दिलाओ।।1।।
आओ भगवन आओ.....।

चारों ओर अँधेरा है, एक सहारा तेरा है।
जीवन सुना-सुना है, पिछड़ा दूना-दूना है।
बुझा हुआ है दीप प्रभु, आया आप समीप प्रभु।
तुम जलते दीपक हो, मुझको अपने तुल्य बनाओ।।2।।
आओ भगवन आओ.....।

निज को इतना भूल गया, बिल्कुल ही बन धूल गया।
आसमान का तारा हूँ, इस धरती से न्यारा हूँ।

इस जग से विच्छेद मिलें, तेरा मुझे अभेद मिले।
अपनी ऊँची श्रेणी में अब, मुझको भी बिठलाओ।।3।।
आओ भगवन आओ.....।

बोधि बीज जो पाया है, तरू बनकर लहराया है।
सत्य ज्ञान का हो सिंचन, झंझाओं से हो रक्षण।
फल आने की ऋतु आई, भव्य साधना बन जाये।
पत्रित, पुष्पित और फलित हो, करूणा रस बरसाओ।।4।।
आओ भगवन आओ.....।

16. ओ मेरे निज चैतन्य प्रभु

ओ मेरे निज चैतन्य प्रभु, तूं याद स्वयं को रखता चल।
तूं शाश्वत घर का वासी है, अक्षय, अव्यय अविनाशी है।।1।।
ओ मेरे निज.....।

तूं चन्द्रकला गुण वाला है, उपयोग वीर्य बल वाला है।
तूं दर्शन मय नूतन चेतन, तूं ज्ञानातम में रमता चल।।2।।
ओ मेरे निज.....।

तूं क्षमा धर्म गुण वाला है, तूं शांति का रखवाला है।
तूं क्रोध मान माया नहीं है, तूं लोभ भाव को तजता चल।।3।।
ओ मेरे निज.....।

पुरुषार्थ सदा ही फलता है, तेरा भाग्य सदा ही फलता है।
शान्ति विरति उपदेश तेरा, उपशांति कषाय की करता चल।।4।।
ओ मेरे निज.....।

निर्वाण धर्म है श्रेष्ठ कहा, भावों की शुद्धि मुख्य यहाँ।
कोमलता, सरलता का जीवन, तूं लघुता पाकर बढ़ता चल।।5।।
ओ मेरे निज.....।

मुनि ''सुमति'' बनकर रहना है, ''गुण'' ही तो धर्म का गहना है।
अर्हंत ''शुभ'' पद का कहना है, तूं मोक्ष मार्ग में बढ़ता चल।।6।।
ओ मेरे निज.....।

जिस दान, सेवा, परोपकार से अहं का पोषण होता है, मान-सम्मान की अपेक्षा रहती है अर्थात् कषाय में वृद्धि होती है, उसका परिणाम पापानुबंधी पुण्य के रूप में मिलता है। उस पुण्य के उदय से जो अनुकूलता प्राप्त होती है, उसका उपयोग प्रायः आस्रव एवं पापकारी प्रवृत्तियों में होता है। परन्तु जिस सेवा, दान, परोपकार आदि पुण्य से अहं, अपेक्षाएँ और कामनाएँ शांत होती है, उस पुण्य का फल मोक्ष मार्ग की साधना में सहायक होता है।

17. दुनियाँ में देव अनेकों हैं।

दुनियाँ में देव अनेकों हैं, अरिहन्त देव का क्या कहना।
उनके अतिशय का क्या कहना, उनके आश्रय का क्या कहना।। टेर।।

जो दर्शन ज्ञान अनन्ता है, जो राग-द्वेष जयवन्ता है।
जो भक्तों के भगवन्ता हैं, उनकी करूणा का क्या कहना।।
दुनियाँ में देव.....।

सुर-असुरों से जो पूजित है, ऋषि मुनियों से जो वंदित हैं।
जो तीन लोक के स्वामी हैं, उनकी महिमा का क्या कहना।।
दुनियाँ में देव.....।

जो आदि धर्म की करते हैं, भव्यों के भव को हरते हैं।
जो तिरते और तिराते हैं, ऐसे तीरथ का क्या कहना।।
दुनियाँ में देव.....।

पूजा-निन्दा में सम रहते, नित वीतरागता में रमते।
जहां समकित दीप जले नित ही, उनकी समता का क्या कहना।।
दुनियाँ में देव.....।

कोई पूजे देव सरागी को, कोई शीष नमाते भोगी को।
अरिहन्त देव ही देव मेरे, देवादिदेव का क्या कहना।।
दुनियाँ में देव.....।

'गौतम' से कहते हैं भगवन, दृढ़ श्रद्धामय हो यह जीवन।
जो शरण में हैं, अरिहन्तों के, उनके मंगल का क्या कहना।।
दुनियाँ में देव.....।

18. जय जिनराज प्रभो...

जय जिनराज प्रभो! हो स्वामी जय जिनराज प्रभो।
शासन स्वामी अन्तर यामी, तीरथ, नाथ विभो।।
ओम जय.....।

अरहा, अर्हंत, अरुह, अभोगी, ईश्वर अरहंता।
केवल दर्शन, केवल ज्ञानी, योगी जयवन्ता।।
ओम जय.....।

सत्य, सनातन, शुद्ध, सुखा कर, शंकर शिववासी।
अजर, अमर, अज, अतुल बली हो, अविचल, अविनाशी।।
ओम जय.....।

परम पुरुष परमात्म पद कज, प्रियतम, प्रियकारी।
वीतराग सुख शांति विधाता, भव-भव भयहारी।।
ओम जय.....।

तुम ही परम पिता परमेश्वर, तुम ही शिवदाता।
तुम ही सहज सखा हो स्वामी, मात तात भ्राता।।
ओम जय.....।

अजब निराली शक्ति तिहारी, महिमा अतिभारी।
चरण कमल में शीश झुकाते, सुरनर व्रतधारी।।
ओम जय.....।

तव स्मरण से पाप हमारे, सारे हट जावें।
विपदा सारी दूर हटावें वांछित फल पावे।।
ओम जय.....।

आश हमारी पूरण करियो, भव दुःख दूर करो।
डूबत है अब नाव भंवर में, सागर पार करो।।
ओम जय.....।

भगवान तेरे पद पंकज के हम, मधुकर बन जायें।
यही कामना एक हमारी, सत्य पर डट जावें।।
ओम जय.....।

19. ऐसा अपना घर हो....।

गुण सौरभ से रहे महकता, जहाँ जीवन सुखकर हो।
ऐसा अपना घर.....।
कथनी करनी रहे एकसी, नहीं जिसमें अन्तर हो।।1।।
ऐसा अपना घर.....।

विनय, विवेक की नींव हो जिसमें, प्रेम प्यार की छत हो,
रहे मधुर व्यवहार सभी से, वचनों में अमृत हो।
सहनशीलता का हो आंगन, कटुता का न जहर हो।।2।।
ऐसा अपना घर.....।

उस घर में मजबूत बने, विश्वास की सब दीवारें,
कठिन घड़ी में बन जायें, सब एक दूजे के सहारे।
खिड़की हो अनुशासन की तो, विघटन का न असर हो।।3।।
ऐसा अपना घर.....।

मर्यादा की चार दिवारी में, सब मर्यादित हों,
सादा जीवन उच्च विचारों से, सब ही प्रमुदित हों।
बड़े जनों का हो आदर और छोटों पर भी महर हों।।4।।
ऐसा अपना घर.....।

सेवा और सहयोग का जिसमें, हो दरवाजा सुन्दर,
चित्र नहीं चारित्र की पूजा, हो जिस घर के अन्दर।
धर्म के सन्मुख रहें सदा सब, पापों से जहां डर हो।।5।।
ऐसा अपना घर.....।

स्वच्छ आचरण की हो बहारें, ज्ञान प्रकाश हो पूरा,
मोक्ष लक्ष्य की सीढ़ी हो तो, काम रहे न अधूरा।
'गौतम' से प्रभु फरमाते हैं, अब तो शाश्वत घर हो।।6।।
ऐसा अपना घर.....।

20. मात पिता गुरु प्रभु

मात-पिता गुरु प्रभु चरणों में प्रणवत बारम्बार,
हम पर किया बड़ा उपकार.....।।

माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण कभी न जाए चुकाया।
अंगुली पकड़ कर चलना सीखाया, ममता की दी शीतल छाया।
जिनकी गोदी में पलकर, हम कहलाते होशियार।।
हम पर किया बड़ा उपकार.....।।

पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा-कमा कर अन्न खिलाया।
पढ़ा लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सीखाया।
जोड़-जोड़ अपनी सम्पति का, बना दिया हकदार।।
हम पर किया बड़ा उपकार.....।।

तत्त्व ज्ञान गुरु ने समझाया, अंधकार सब दूर हटाया।
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, प्रभु दर्शन का मार्ग बताया।
बिन स्वार्थ ही कृपा करें, वे कितने बड़े हैं उदार।।
हम पर किया बड़ा उपकार.....।।

प्रभु कृपा से नरतन पाया, संत मिलन का साझ सझाया।
बल, बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया।
जो भी इनकी शरण में आता, कर देते उद्धार।।
हम पर किया बड़ा उपकार.....।।

21. मेरे मालिक की दुकान में, सब लोगों का खाता

मेरे साहब के दरबार में, सब लोगों का खाता।
जैसा जिसके भाग्य में होता, वो वैसा फल पाता।।
मेरे मालिक के.....।

दुनियाँ वालों कलियुग वालों, सुनों रे पते की मैं एक बात बताता।
नहीं चले उसके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी।
उसके अपने लेन-देन की, रीति बड़ी है बांकी रे, भैया रीति...2।।
समझदार तो चुप रहता है, मूर्ख शोर मचाता रे।।1।।
मेरे मालिक के.....।

क्या साधु क्या सन्त गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी।
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सबकी कर्म कहानी।
वहीं तो सबके जमा खर्च का, सही तो हिसाब लगाता रे।।2।।
मेरे मालिक के.....।

करता है इन्साफ सभी का, हर आसन पर डट के।
उसका फैसला कभी न टलता, लाख कोई सर पटके।
पुण्य का बेड़ा पार करे और, पाप की नाव डुबोता रे।।3।।
मेरे मालिक के.....।

अच्छी करणी करियो रे लाला, कर्म न करियो काला।
तुझे देख रहा लाख आंख से, तुझे देखने वाला।
अच्छी खेती करो रे चतुर धन, समय गुजरता जाता रे।।4।।
मेरे मालिक के.....।

22. कैसे हो कल्याण, करनी काली है?

कैसे हो कल्याण, करनी काली है,
नहीं होगा भुगतान हुंडी जाली है ।

तूं तन का काला धब्बा, धो लेता फौरन पानी।
तेरे मन पर कितने काले, धब्बों की पड़ी निशानी,
क्यों न निहाली है, नहीं होगा.....।

तेरा बिगड़ा पड़ा है इंजिन, गाड़ी किस तरह चलेगी,
दीपक में तेल खतम है, बत्ती किस तरह जलेगी।।
बुझने वाली है.....।

तेरे अन्दर जान नहीं है, कैसे फिर देह चलेगी।
तेरी नैय्या फूट रही है, कैसे फिर पार लगेगी।।
डूबने वाली है.....।

नकली हुंडी को जला दें, इस मन को शुद्ध बना लें,
तूं पी ज्ञानामृत प्याला, मरता प्यास बुझाले।।
सुगुरु गुणशाली है.....।

23. ले चल गुरुवर नाव

ले चल गुरुवर, नाव हमारी, भी भवसागर पार।
गहरी धारा, दूर किनारा, टूट गई पतवार।। टेर।।

यह तो भगवन जादू नगरी, केवल छल माया,
झूठे स्वप्न, झूठे खेलों में, मानव भरमाया,
व्यथा, विकल, बैचेन तड़फना, मिला नहीं आधार।।
गहरी धारा.....।।1।।

अपनी लघुता को नहीं देखा, देखा गगन का चांद,
जितना छोटा बौना उतनी, ऊँची इच्छा छलांग।
केवल मिथ्या ममता लहरें, काट चलो मोहधार।।
गहरी धारा.....।।2।।

आत्मा का नहीं मूल्य यहां, केवल मिट्टी की चाह,
अंतर की प्यासी तड़पन को, मिली न कोई राह।
मन में कलुष भरा है लेकिन, जड़ तन का श्रृंगार।।
गहरी धारा.....।।3।।

अंगारों पर नीड़ बसा, सोया हूँ भ्रम में भूल,
फूलों के धोखे में केवल, संग्रह करता शूल।
मोह 'भ्रमर' में आन फंसा हूँ, तार ''विचक्षण '' तार।।
गहरी धारा.....।।4।।

जड़ पदार्थों के सम्पर्क में लगातार न रहने के बावजूद उनसे संबंध टूट नहीं जाता। जिस बैंक में हमारे पैसे जमा हों, उस बैंक में चाहे 5-7 साल तक पैर न धरें, फिर भी बैंक में रखे पैसों से हमारा संबंध कट नहीं जाता। परन्तु परिवार के साथ 2-3 साल तक संबंध न रखें, अपने बच्चों और परिजनों से न मिलें, ग्राहकों से सम्पर्क न रखें, तो उन सबके साथ हमारा आत्मीय संबंध नहीं रह सकता, क्योंकि ये सब जीवन्त संबंध होते हैं।

24. अब सौंप दिया इस जीवन का

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारें हाथों में।।

मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूं, दुनियाँ भर का, सब भार तुम्हारे चरणों में।।1।।

जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे गुण दोष समर्पित हों, भगवान तुम्हारे चरणों में।।2।।

यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं।
इस पूजक की एक-एक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।।3।।

जब-जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूँ।
फिर अंत समय में प्राण तजूं, निराकार तुम्हारें हाथों में।।4।।

मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।5।।

25. श्री पार्श्वदेव चरणों में.....।

श्री पार्श्वदेव चरणों में, शत-शत प्रणाम हों।
मेरे मानस के स्वामी, तुम एक धाम हो।।टेर।।

दुनियाँ में देव लाखों, हैं पूजे जा रहे।
जिन देव! इस रसना में, बस तेरा नाम हो।।1।।
मेरे मानस के.....।

तुमसे ना राग रत्ती, न द्वेष ओरों से।
यह वीतरागाता तेरी, मेरा विश्राम हों।।2।।
मेरे मानस के.....।

उऋण बनूं में कैसे, उपकार से अहो।
चरणों में भले पन्हैया, यह मेरी चाम हों।।3।।
मेरे मानस के.....।

पा एक पारस को, हत भाग्य जो रहा।
पारस अब स्वयं बनूं मैं, बस वैसा काम हों।।4।।
मेरे मानस के.....।

नस-नस में बस रहे हो, रस ज्यों कवित्व में।
भगवान भक्त तुलसी के, तुम ही राम हो।।5।।
मेरे मानस के.....।

26. हे वीर प्रभु भगवान...।

हे वीर प्रभु भगवान, अरज सुनले रे मेरी-2
मैं भटक फिरा संसार , अनादि पाया नहीं रे पार।। टेर।।

इस जीवन के विकट मार्ग में, कांटे भरे पड़े हैं,
मिथ्या दर्शन मान माया, रास्ता रोके खड़ें हैं,
रे मैं हूँ बड़ा नादान, न जाने कैसा है यह अज्ञान।।1।।
अरज सुनले रे मेरी.....।

पथ भी भूला, राही अकेला, ज्ञान नजर पथराई,
काम स्नेह और दृष्टि राग के, मृग भ्रम में उलझाई,
नहीं रहा सत्य का ज्ञान, स्व पर की नहीं रही पहचान।।2।।
अरज सुनले रे मेरी.....।

मैं चेतन यह नश्वर सेना, अपने हाथ सजायी,
आज सबल वन मुझे लूटने की, रण भेरी बजाई।
दो कोई 'विचक्षण' तान भ्रमर का दूर करो अज्ञान।।
अरज सुनले रे मेरी.....।

27. जिसने राग-द्वेष

जिसने रागद्वेष कामादिक जीते, सब जग सारा जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरिहर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति भाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी में लीन रहो।।1।।

विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्यभाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह का हरते हैं।।2।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ।।3।।

अहंकार का भाव न रखूं, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती पर, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ।

रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, ओरों का उपकार करूँ।।4।।

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करूणा स्रोत बहे।
दुर्जन क्रूर कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझकों आवे।
साम्यभाव रखूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे।।5।।

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी में, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे।।6।।

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊं या, मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्यायमार्ग से मेरा, कभी न पग डिगने पावे।।7।।

होकर सुख में मग्न न फूलें, दुःख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावे।।8।।

सुखी रहे सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
वैर पाप अभिमान छोड़, जग नित्य नये मंगल गावे।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कर दुष्कृत हो जावे।
ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुष्य जन्म फल सब पावे।।9।।

इति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करें।
न्यायप्रिय होकर नेता भी, न्याय प्रजा का किया करें।
रोग, मरी, दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करें।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैले सर्वहित किया करें।।10।।

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करें।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करें।
बन कर सब युगवीर, हृदय से, देशोन्नतिरत रहा करें।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करें।।11।।

28. श्वासों का क्या ठिकाना

श्वासों का क्या ठिकाना, रुक जाय चलते-चलते-2।
प्राणों की रोशनी भी, बुझ जाय जलते-जलते-2।।टेर।।

जीवन है स्वप्न जैसा, दो दिन का है बसेरा-2।
आयेगी मौत निश्चित-2, ले जाय बचते-बचते-2।।
श्वासों का.....।।1।।

जीवन है इक तमाशा, पानी में ज्यों बताशा-2।
नश्वर जल बुदबुदे ज्यों-2, घुल जाए घुलते-घुलते-2।।
श्वासों का.....।।2।।

आयेगा एक झोंका, जीवन का दीप है गुल-2।
पेड़ों पर चहचहाती-2, निष्पंद है ये बुलबुल-2।।
श्वासों का.....।।3।।

कितने ही घर बसाये, कितने ही घर उजाड़े-2।
स्थायी रहा न राही-2, श्वासों के घटते-2 ।।
श्वासों का.....।।4।।

अरमान लंबे बांधे, टूटे न तार सांधे-2 ।
अन्तिम समय में सब ही-2, रहे हाथ मलते-2 ।।
श्वासों का.....।।5।।

आया था हाथ खाली, खाली ही जा रहा है-2।
परिवार और प्रियजन-2, ले जाय मरते-2।।
श्वासों का.....।।6।।

श्वासों के ही सहारे, जीवन के खेल सारे।
श्वासों का यह पिटारा, चुक जाय चुकते-2।।
श्वासों का.....।।7।।

श्वासों के तार सारे, प्रभु नाम के सहारे।
बांधेंगे वे, अमर नर, मर जाय हंसते-हंसते।।
श्वासों का.....।।8।।

सुखपूर्ण स्वर्ण अवसर, रे मूर्ख यों न खो रे-2।
विचक्षण भ्रमर से तरजा, प्रभु नाम रटते-2।।
श्वासों का.....।।9।।

29. दुनिया ये आनी जानी है

(दुनिया ये आनी जानी है-2 ।।)

इस दुनिया की हर एक चीजें, केवल पगले पानी है।
दुनियाँ यह.....।

यह भोली सी सुन्दर सूरत, पावन प्यारी मनहर सूरत।
चार कंधे लकड़ी की डोली, होली सी जल जानी है।।
दुनियाँ यह.....।

भाई, बंधु, कुटुम्ब, कबीला, साज सज्जा सामान छबीला।
धन वैभव की प्यारी ढ़ेरी, पगले यहीं रह जानी है।।
दुनियाँ यह.....।

प्यार परस्पर बंट जाता है, स्वार्थ में मन रम जाता है।
चार दिनों की चटकी मटकी, जीवन भर पछताना है।।
दुनियाँ यह.....।

झूठे माया मोह लगाए, एक पल चैन न लेने पाये।
खान-पान सुख चैन नहीं, मन में फूला अभिमानी है।।
दुनियाँ यह.....।

ज्ञान नयन क्यूं मूंदे प्यारे, अमूल्य जीवन यों मत हारे।
चिड़ियाँ खेत चुगेगी पीछे, कुछ भी न आनी जानी है।।
दुनियाँ यह.....।

शरण विचक्षण संत पुरुष की, जाये जननी धन्य है उनकी।
कष्ट की नैय्या भवसागर से, 'भ्रमर' से पार लगानी है।।
दुनियाँ यह.....।

30. बुलावा काल आने पर

बुलावा काल आने पर, ये नाते छूट जाते हैं।
वो ले जाता हमें परलोक, ये रिश्ते टूट जाते हैं।।

वो पत्नी प्रेम से कहती कि यह तो है पति मेरे,
बहिन कहती मेरे भैय्या, लाल कहता पिता मेरे।
चले जब डोली कंधों पर, ये रिश्ते टूट जाते हैं।।
बुलावा काल.....।

बना डाले महल तूने, खरीदी कार भी तूने,
यह होटल कारखाने भी, बना डाले यहाँ तूने।

चलेगा साथ में क्या-क्या, बताना भूल जाते हैं।।
बुलावा काल.....।
उठा लो सब कहे जल्दी, न इससे कोई नाता है,
दबा देंगे वे इस तन को, सुशील नहीं रहम आता है।
जला देंगे वे इस तन को, जिसे तुम अपना कहते हो।।
बुलावा काल.....।

31. तूं उड़जा हंस अकेला

तूं उड़जा हंस अकेला रे, यह है जग जीवन मेला।।टेर।।

पृथ्वी पर दो साधु आए, एक गुरु एक चेला।
गुरु की करणी गुरु जायेगा, चेले की करणी चेला रे।।1।।
तूं उड़जा.....।

धरती पर एक महल बनाया, पंचतत्व का गारा।
प्रेमी नगर से ज्ञानी बुलाए, महल बना अलबेला रे।।2।।
तूं उड़जा.....।

कोड़ी-कोड़ी माया जोड़ी, जोड़ जमीन में ढेला रे।
सभी छोड़कर चला है बन्दे, संग चले न धेला रे।।3।।
तूं उड़जा.....।

32. तूं सुन ले रे प्राणी

तूं सुन ले रे प्राणी कि जग में, कोई नहीं है तेरा,
दुनियाँ के धन माल खजाने और परीजन प्यारे,
स्वार्थ के सब रिश्ते नाते, बिन स्वार्थ निपटारे,
पाप पुण्य बस साथ चलेंगे और यहीं रह जाये।
क्यों भूला है झूठे भ्रम में, दो दिन का है बसेरा।।
तूं सुन ले.....।

मोह माया में फंसकर तूनें, अपना जन्म गंवाया,
जिसको कहता मेरा मेरा, वह सब तो है पराया,
मैं मेरे का ज्ञान तूं कर ले, ये ही कहते ज्ञानी,
एक दिन होगा इस दुनियां से कूच तेरा डेरा।।
तूं सुन ले.....।

श्रद्धा ज्ञान और संयम ही है, जीवन को विकसाते,
उत्तम मानव भव पाकर के, मूर्ख व्यर्थ गंवाते,

बुद्धिमान नर साधक बनते, धन्य-धन्य कहलाते,
होऽऽ क्यों भूला है, झूठे भ्रम में, दो दिन का है बसेरा।।
तूं सुन ले.....।

33. कहा मेरा मान रे

कहा मेरा मान रे, तज अभिमान रे.....।
दो दिन का जीवन तेरा, काहे को गुमान रे।।टेर।।

सूर्य उदय हुआ, पूर्व में हंसता, मध्याह्न वेला देखो, तेज चमकता
संध्या पश्चिम में पाया, रवि अवसान रे।
दो दिन का.....।।

सहज सवेरे खिला एक फूल रे, मध्याह्न यौवन लागी विषयों की शूल रे,
जीवन की संध्या आई, मरण अभियान रे।
दो दिन का.....।।

बाग बगीचे हाट हवेली, पुत्र पुत्री घर नार नवेली,
फूला-फूला फिरे प्यारे, भूला-भूला मान रे।
दो दिन का.....।।

खोटी कमाई करे, काला बाजार रे, एक एक पैसे के करें पैसे हजार रे,
पर के पोषण खातिर, बना बेइमान रे।
दो दिन का.....।।

दृश्य जगत के रंग रंगीले, जाल बिछाये सारे छैल छबीले,
रेगिस्तानी भूमि में, मृगजल की तान रे।
दो दिन का.....।।

आशा और अरमान जो तेरे, स्वप्न जीवन के तेरे रहेंगे अधूरे,
मिथ्या है कल्पना की, ऊँची उड़ान रे।
दो दिन का.....।।

क्रोड़पति भी श्मशान आते, अन्त समय कुछ साथ न लाते,
दुनिया का नियम यही है, दो दिन मेहमान रे।
दो दिन का.....।

धरा, ढका धन सब परिजन प्यारे, एक दिन जीवन में ऐसा आवेगा प्यारे,
अपनी करनी के फल पावेगा, सुजान रे।
दो दिन का.....।।

सूरज तारे नभ का ये चन्दा, दुनिया का काम यों ही चलेगा रे बन्दे,
तुम को तो जाना होगा, तज के सयान रे।
दो दिन का.....।।

तूं रहेगा तो भी दूनिया चलेगी, तूं चला जाए, पर यह न चलेगी,
तज दे रे मूर्ख, कर्ता पन का, अभिमान रे।
दो दिन का.....।।

तूं नहीं करता, तूं नहीं भर्ता, तूं नहीं पगले, सुख दुःख हर्ता,
नियति के नियम रहते, अटल अमान रे।
दो दिन का.....।।

समझ विचक्षण ज्ञानी सुनावे, कंचन में मोही मनवां तूं क्यों भरमावे,
मोह 'भ्रमर' में डाला, जीवन जलयान रे।
दो दिन का.....।

34. हे तेरे अन्तर में

हे तेरे अन्तर में अनन्त आनन्द सिंधु लहराता
फिर क्यों पर मैं ललचाता, फिर क्यों बाहर भरमाता?
क्यों एक बिन्दु, मधु बूंद स्वाद हित, जन्म-मरण दुःख पाता।।
फिर क्यों पर.....।

सुख-दुःख दोनों क्षण भंगुर हैं, हर्ष शोक क्या करना?
फिल्म हॉल में बैठके पगले, क्या हंसना क्या रोना?
यह भी देखा, वह भी देख ले, इनमें क्यों बह जाता।।
फिर क्यों पर.....।

क्रोध, लोभ, मद, मोह, मान, माया, जीवन की छलना,
क्षण प्रति क्षण जागृत हो रहना, हो न कभी कुछ स्खलना,
जो सावचेत, जो सावधान, वो सत्त्वर मंजिल पाता।।
फिर क्यों पर.....।

आज बिछुड़ना, कल मिलना है, उदय अस्त जीवन में,
उन्नत-अवनत, चढ़ती-पड़ती, घटती-बढ़ती, जन-जन में,
सुख-दुःख दाता, कोई नहीं, तूं स्वयं-स्वयं निर्माता।।
फिर क्यों पर.....।

नित्य, निरंजन, निर्मल, निर्मम, निराकार, निर्भय तूं,
अजर, अमर, अविचल, अविनाशी, अमल, अखंड, अमृत तूं,
शुद्ध, बुद्ध, परिबुद्ध, मुक्त, तूं ही है भाग्य विधाता।।
फिर क्यों पर.....।

द्वन्द्व क्लेश उलझने, अशांति, सुख-दुःख निपट निराला,
ज्ञाता, दृष्टा, साक्षी भाव तूं, वीतराग गुण वाला,
शरण विचक्षण, ज्ञान ज्योति से, ''भ्रमर' पार भव पाता।।
फिर क्यों पर.....।

35. झूमता है शान में

झूमता है शान में, भूला है भूल में,
लेकर सुगन्ध मस्त तूं, कागज के फूल में।।
झूमता है.....।

माना कि पास में तेरे, वैभव विशाल है,
तूं रूप में, स्वरूप में, भी बेमिसाल है।
सब कुछ ही नाशवान है, मिल जाना धूल में।।
झूमता है.....।

मन में लगी जो आग, नहीं शांत कर सका,
भोगों की वासना से, अब तक न तूं थका।
फूलों की राह छोड़ कर उलझा है शूल में।।
झूमता है.....।

तूं ज्ञानवान आत्मा, भगवान तुल्य है,
चाहे महान् बनना, तो अवसर अमूल्य है।
पाया है नर जन्म, क्यों खोता फिजूल में।।
झूमता है.....।

36. सुनों मेरे चेतन, नश्वर ये तन

सुनों मेरे चेतन, नश्वर ये तन, कौन गुमान में, भूले मेरे भाई।।टेर।।
मिट्टी के पुतले, साज सजाये, बूंद लगे और गल-गल जाए,
क्या नहलाये, क्या सहलाये, तेरी इसकी मूल जुदाई।।1।।
सुनों मेरे.....।

तूं अविनाशी, चिन्मयवासी, जड़ तन नश्वर मरघट वासी,
सड़ेगा, गलेगा संग न चलेगा, क्यों करता तूं पाप कमाई।।2।।
सुनों मेरे.....।

बचपन आता, यौवन पाता और बुढ़ापा ढल-ढल जाता,
सभी अवस्था, शरीर व्यवस्था, तूं अजरामर अविचल राही।।3।।
सुनों मेरे.....।

मल-मूत्र से, भरी है ये काया, ऊपर सुन्दर चाम चढ़ाया,
दश-दश नाली, गंदगी, डाली, तीव्र घृणा से आवे उबकाई।।4।।
सुनों मेरे.....।

प्रभु के भजन में जीवन लगा दे, संयम साधना तूं अपना ले,
शरण 'विचक्षण' ले ले तूं प्रतिक्षण, भव की भ्रमरिया दे विरमाई।।5।।
सुनों मेरे.....।

37. आशाओं का हुआ खातमा

आशाओं का हुआ खातमा, दिल की तमन्ना धरी रही।
बस परदेशी हुआ रवाना, प्यारी काया पड़ी रही।।

करना- करना, आठ प्रहर ही, मूरख कूक लगाता है।
मरना-मरना तुझे कभी ना, लब्ज जुबां पर आता है।
लेकिन मरना ही होगा, नहीं झंडी किसी की गडी रही।।1।।
बस परदेशी.....।

एक पंडित जी पत्री लेकर, गणित हिसाब लगाते थे।
सभी काल तेजी मंदी का, होनहार बतलाते थे।
आया काल, चले पंडित जी, कर में पत्री पड़ी रही।।2।।
बस परदेशी.....।

एक वकील ऑफिस में बैठे, सोच रहे थे अपने दिल।
फलां दफा पर बहस करूंगा, पोइन्ट मेरा अति प्रबल।
इधर कटा वारन्ट मौत का, कल की पेशी पड़ी रही।।3।।
बस परदेशी.....।

एक सेठ बैठे दुकान पर, जमा खर्च खुद जोड़ रहे।
कितना लेना, कितना देना, यही तो हर दम सोच रहें,
काल बली की लगी चोट जब,कलम कान पर टंगी रही।।4।।
बस परदेशी.....।

जेन्टल मेन एक घूमन को, रोज शाम को जाता था।
पांच-सात थे मित्र साथ में, बातें बड़ी बनाता था।
ठोकर लगी पड़े बाबूजी, बंधी हाथ में घड़ी रही।।5।।
बस परदेशी.....।

एक नेता का इलाज करने, डॉक्टर जी तैयार हुए।
विविध दवा, औजार, इन्जेक्शन, मोटर कार सवार हुए।
आया काल उलट गई मोटर, बोक्स दवा से भरी रही।।6।।
बस परदेशी.....।

हां-हां कितनी और सुनाऊँ, दुनिया की है अजब गति।
चन्दन आना और जाना है, फर्क नहीं है, पाव रत्ती।
नेक कमाई की है जिसने, उसकी ही बस खरी रही।।7।।
बस परदेशी.....।

38. रे मन संभल-संभल

रे मन संभल-संभल पग धर रे, अन्तर आंखें खोल।
उबड़-खाबड़ मानस भू पर, कदम न जाएं डोल।।
रे मन संभल.....।

देख पड़े हैं, पथ में रोड़े, क्रोध मान, मद लोभ,
मोह महीधर, देख बीच में, मत करना मन क्षोभ।
इनकी राह अलग है तेरी, अन्तर राह टटोल।।
उबड़ खाबड़.....।

देख सतर्क बने रहना, मत करना इनसे छेड़,
ज्ञाता दृष्टा साक्षी भाव में, रहकर इन्हें खदेड़।
ये जड़ नश्वर सतत विनश्वर, तेरा मोल अमोल।।
उबड़ खाबड़.....।

अमृत घट अन्तर में तेरे, खोज सके तो खोज,
बाहर से उपयोग हटा कर, ले अमृत की मौज।
संभल अरे अमृत घट में, मत विष की बूंदे घोल।।
उबड़ खाबड़.....।

स्वर्ण समान मिला मानव तन, वीतराग विज्ञान,
खूब विचक्षणता से चलना, जीवन के मैदान।
सुख दुःखमय, संयोग-वियोग में, थिरचित रहो अडोल।।
उबड़ खाबड़.....।

39. चांदी और सोने में उलझा

चांदी और सोने में उलझा, प्रभु का रास्ता छूट गया।
माया के मृगजाल में फंसकर प्रभु से रिश्ता टूट गया।।
चांदी और सोने.....।

चंद रुपये की मौज शोक में, तूं जीवन सुख ढूंढ रहा,
स्वजन कुटुम्ब परिवार, पति-पत्नी में तू बन मूढ रहा,

काम कामना, माया तृष्णा, वैतरणी में डूब रहा,
पूर्व पुण्य खजाना तेरा, देख अरे नर खूट गया।।
माया के मृगजाल.....।

दया गरीबों पर न आयी, ना भाई पर प्रीत धरी,
नहीं सुनीं तूने दुर्बल की, करुण कहानी पीड़ भरी,
दान दिया ना खुले हाथों, ना भूखों की भूख हरी,
अब पछताता मरण खाट पर, जब तेरा सब लूट गया।।
माया के मृगजाल.....।

राह में राही तेरी मिल्कत, मिल अपने सब लूट रहें,
मन की मन में रह गई पगले, अब क्यों माथा कूट रहें,
यह श्वासों के दुर्बल धागे, अब टूटें कब टूट रहे,
घड़ा पाप का भरा जीवन भर, आज अंत में फूट गया।।
माया के मृगजाल.....।

तेरी करनी देख के तेरा, मालिक तुझ से रूठ गया,
हाथ बांध कर आया था पर, अब खाली कर मूंठ गया,
हाय-हाय करता जीवन, बगिया का माली उठ गया,
मरण खाट पर खड़े स्नेही, भूल कलेजा चूट गया।।
माया के मृगजाल.....।

नादानी मत कर रे मूरख, धन वैभव नहीं तेरा है,
चार दिनों की चकाचौंध, आखिर जंगल में डेरा है,
दान, शील, तप, भाव, भावना, स्वर्णिम ज्ञान उजाला है,
वही विचक्षण जो जीवन में, पी अमृत की घूट रहा।।
माया के मृगजाल.....।

40. तुम मत बनना भैया कि जड़

तुम मत बनना भैया कि, जड़ दृश्यों में दीवाना ।टेर।

जिसे सवेरे देख रहा तूं, सांझ नजर ना आये,
सुन्दर सूरत मनहर मूरत, मिट्टी में मिल जायें,
काठ की अर्थी चार कंधे पर, अग्नि ज्वाल लगाये,
ऐसे इस जग के खेलों पर, बोलों क्या रीझाना।।
तुम मत.....।

सुख के साथी, दुःख में दूरे, स्वार्थिया जग मेला,
आफत का मारा, मन बेचारा, फंसा अज्ञान झमेला।

फूलों के धोखे में, शूलों से मूरख, मुग्ध बना मन खेला,
ऐसे साथी कोई मिले ना, दुर्दिन साथ निभाना।।
तुम मत.....।

अब तो चेतो समय बचा है, जीवन घड़ियाँ बीते,
चार दिनों की चटकी मटकी, क्या हारे क्या जीते।
मोह मुग्ध ममता में डूबे, माया मदिरा पीते,
मृग जल से गुरु पार करेंगे, मन विश्वास बिठाना।।
तुम मत.....।

वीतराग प्रभु सच्चे साथी, गुरु हस्तीवर पाये,
देते शक्ति प्रभु की भक्ति, भव जल पार लगाये।
उपशम ले सुविवेक संवर मन, भव ज्वाला विरमाये,
गुरु बिन देखों मोह भ्रमरिया, निज बल पार न पाना।।
तुम मत.....।

41. उठ जाग मेरे चैतन्य प्रभु

उठ जाग मेरे चैतन्य प्रभु, तूं अजर अमर अविनाशी है,
मृत्यु से भय क्यों खाता है, तूं शाश्वत घर का वाशी है।

जो मरता है वह तूं नहीं है, जो जन्मा वह भी तूं नहीं है,
पुद्गल का मिलना बिछुड़ना है, तूं पुद्गल नहीं अविनाशी है।

ये वर्ण, गंध, स्पर्श, सभी, सब तुझमें नहीं पुद्गल में हैं,
अरु अंधकार भी नहीं तुझमें, तूं ज्योर्तिमय अविनाशी है।

तूं सहजानंद स्वभावी है और आनन्दधन त्रिकाल सदा,
नहीं रोग शोक दुःख द्वन्द तेरे, तूं मोह अज्ञान विनाशी हैं।

42. कोई नहीं है जग में थारों

कोई नहीं है जग में थारों जाण ले, कियोड़ों फल पासी रे भोला,
केणों म्हारों मान ले, म्हारों केणों मान ले।।

पांच तत्त्व री काया थारी, एक दिन तो मिट जावेला,
पड़ियो पड़ियो पछतावेला, जद मौत सिरहाने आवेला।
अरे सुन रे भाई, अब अकल सूं काम ले.....।।1।।
कियोंड़ों फल.....।

मिनख जमारो मिल्यो बांवरा, बार-बार नहीं पावेला।
थारो म्हारो करता-करता, हंसों तो उड़ जावेला।

खरो नाम है अरिहंत रो, पहचान ले, जान ले.....।।2।।
कियोंड़ों फल.....।

गर्भकाल में कियो रे वायदो,अब क्यों वाने भूले है।
माया रे चक्कर में पड़, ममता रो झूलो झूले है।
सद्गुरु री सीख हिंया में धार ले.....।।3।।
कियोंड़ों फल.....।

43. एक भूपाल है, एक कंगाल है

एक भूपाल है, एक कंगाल है, क्या बतायें।
अपनी करणी के फल सब पायें।।टेर।।

एक फूलों की शय्या पर सोता, एक खाट बिछाकर रोता।
एक मौज करें, एक आह भरें, क्या बतायें।।
अपनी करणी.....।

एक खाता मिठाई बंगाली, एक खाता है दर-दर पे गाली।
जैसी करनी करे, वैसी भरनी भरे, क्या बतायें।।
अपनी करणी.....।

एक मोटर की करता सवारी, एक दर-दर पे फिरता भिखारी।
जैसा कर्म करे, वैसा जीव भरे, क्या बतायें।।
अपनी करणी.....।

एक सेठानी बनकर बोले, एक मंगति घर-घर पे डोले।
टुकड़ा दे दो मुझे, नैना नीर बहें, क्या बतायें।।
अपनी करणी.....।

एक राजा की रानी बनी है, एक बन मेहतरानी खड़ी है।
झाड़ूदेती फिरे, गलियाँ साफ करें, क्या बतायें।।
अपनी करणी.....।

संत जन तुम्हें समझायें, धर्म किया सदा सुख पायें।
जैसी करणी करे, वैसी भरणी भरे, क्या बतायें।।
अपनी करणी.....।

जन्म से मृत्यु तक दौड़ता है आदमी

जन्म से मृत्यु तक दौड़ता है आदमी, दौड़ते ही दौड़ते दम तोड़ता है आदमी।
दो रोटी, एक लंगोटी, तीन गज कच्ची जमीन, जिन्दगी में जोड़ता ही जोड़ता है आदमी।।
जोड़ते ही जोड़ते दम तोड़ता है आदमी।

44. जरा कर्म देखकर करिये

जरा कर्म देखकर करिये, इन कर्मों की बहुत बुरी मार है।
नहीं बचा सकेगा परमात्मा, फिर औरों का क्या एतबार है।।

बारह घड़ी तक बैलों को बांधा, छींका लगा दिया खाने का।
बारह मास तक ऋषभ प्रभु को, आहार मिला नहीं खाने को।
इस युग के प्रथम अवतार हैं, बिन भोग्या ना छूटे लार है।।1।।
नहीं बचा.....।

त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में, दास के कानों में शीशा डला।
कर्म निकाचित बांधे वीर ने, तीर्थंकर थे पर ना टला।
खड़े ध्यान में वन के मंझार है, दिये कानों में कीले डाल है।।2।।
नहीं बचा.....।

सौतेली माँ बन सौत के सुत सिर, बाटियां बांध के प्राण हरा।
निन्नाणु लाख भवों के बाद में, गजसुकुमाल बन कर्ज भरा।
चढ़ा सोमिल को क्रोध अपार है, डाले सिर पे धधकते अंगार हैं।।3।।
नहीं बचा.....।

किसी को मारे, किसी को लूटे, काम करे अन्यायी का।
जैसा करेगा, वैसा भरेगा, लेखा है राई-राई का।
नहीं छोटे बडे की दरकार है, चाहे कर ले तूं जतन हजार है।।4।।
नहीं बचा.....।

पग-पग पे संयम रख तूं वचन से, बोले तो बोल भलाई का।
धर्म से प्रीत कर कर्मों को जीत कर, बन जा पथिक शिव राही का।
ये सुख-दुःख भरा संसार है, यहाँ कर्मों का ही व्यापार है।।5।।
नहीं बचा.....।

45. कब होगा प्रभुवर कब होगा?

कब होगा प्रभुवर कब होगा, वह दिन मेरा कब होगा।
बाह्य भाव से मोड़ गति मन, अन्तर सन्मुख कब होगा।।

नहीं सताऊँ किसी जीव को, मन-वच-काया से भगवन।
कभी असत्य न बोलूँ चाहें, कट जाये मेरी गर्दन।।
परधन पत्थर तुल्य मान, मर जाऊँ भले ही, मैं रहूँ निर्धन।
ब्रह्मचर्य के ब्रह्मरूप में, मेरा विचरण कब होगा।।1।।
कब होगा .....।

परिग्रह की मूर्च्छा से हटकर, संतोषामृत पान करूँ।
दुखियों के दुःख भरसक हर कर, निज अन्तर में आप रहूँ।
परोपकार भलाई पर की, पर प्रमोद पर प्रेम करूँ।
विश्व मैत्री का अविरल झरना, मेरे अन्दर कब होगा।।2।।
कब होगा .....।

पुद्गल द्रव्यों की चकाचौंध, तृष्णा की जहरीली ज्वाला।
काम-कामना की मदहोशी, विषय-वासना की ज्वाला।
बाहर उज्ज्वल रूप मनोहर, भीतर अंधकार काला।
कथनी-करनी, बाहर भीतर, एक रूप प्रभु कब होगा।।3।।
कब होगा .....।

तूँ करुणाकर सुखमय स्वामी, वीतराग तारण वाला।
तूँ ही नाथ निरंजन तूँ ही, भय भंजन तूं रखवाला।
तूँ पावन, तूँ पूज्य परमशुद्ध, हरता पाप महाकाला।
तेरी माला जपूं निरन्तर, ऐसा शुभ दिन कब होगा।।4।।
कब होगा .....।

सुख सागर अन्तर में उछले, दुःख पीड़ायें दूर बहें।
मेरा आतम देव मेरे, अन्तर में तेरा ध्यान करे।
बनूं विचक्षण सदा मगन में, मन मेरे में आप रहें।
जलवत् कमल, कमलवत् भौंरा, ऐसा जीवन कब होगा।।5।।
कब होगा .....।

46. जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा.....।

जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा, प्रभुवर ऐसी भक्ति दो।
समभावों से कष्ट सहूं सब, मुझमें ऐसी शक्ति दो।।
समभावों से.....।

जिन जन्मों में कर्म किये, वो आज उदय में आये हैं।
कष्टों का कुछ पार नहीं, जो वो मुझ पर मंडराये हैं।
डिगे न मन मेरा समता से, चरणों में अनुरक्ति दो।।1।।
समभावों से.....।

कायिक दर्द भले बढ़ जायें, किन्तु मन में क्षोभ न हों।
रोम-रोम भले पीड़ित हों, किन्तु मन विक्षुब्ध न हों।
दीनभाव नहीं आवे मन में, ऐसी शुभ अभिव्यक्ति दो।।2।।
समभावों से.....।

आर्त्तध्यान नहीं आवे मन में, दुःख दर्द को पी जाऊँ।
ध्यान लगा दूं प्रभू चरणों में, हंस-हंस कर मैं जी जाऊँ।
रोने से ना दर्द मिटे, यह पावन चिंतन शक्ति दो।।3।।
समभावों से.....।

महावेदना भले सतावें, ध्यान तुम्हारा ना छोडूँ।
जीवन के अंतिम श्वासों तक, अपनी समता ना छोडूँ।
कभी न मांगू प्रभुवर तुझसे, कष्टों से मुझे मुक्ति दो।।4।।
समभावों से.....।

भले न तन दे साथ जरा भी, मन साधन अनुरक्त रहें।
जीवन की हर श्वास तुम्हारे, चरणों की ही भक्त रहे।
रहे समाधि अविचल मेरी, शांति की अभिव्यक्ति दो।।5।।
समभावों से.....।

47. ऐसी कृपा हो भगवन

ऐसी कृपा हो भगवन, जब प्राण तन से निकले।
होवे समाधि पूर्ण, तेरा नाम मुख से निकले-2।।

पत्नी, पुत्र, परिजन, हैं जो कुटुम्बी सारे,
उनसे ममत्व छूटे, जब प्राण तन से निकले।।
गुरुदेव पास में हो, उपदेश दे रहे हों,
सुनते ही सुनते उनको, आत्म बदन से निकले।।
कोई न शत्रु मेरा , दुश्मन न मैं किसी का,
फिर भी जो कोई होवे, उसका भाव मन से निकले।।
जब प्राण.....।

दुष्कर्म दुःख दिखावें या रोग शोक घेरे,
प्रभु ध्यान नाहीं छूटे।। जब प्राण तन से निकले।।
इच्छा, क्षुधा, तृषा भी, होवे जो उस घड़ी में।
उसका भी त्याग कर दूं, जब प्राण तन से निकले।।
जग में न चित्त हो मेरा, एक ध्यान हो तुम्हारा,
नवकार जपते-जपते, आत्मा बदन से निकले।।
जब प्राण.....।

यह भावना है मेरी, चाहूं सदा यहीं मैं,
समभाव पूर्ण चित्त हो, जब प्राण तन से निकले।।

48. भक्ति करता छूटे म्हारो प्राण

भक्ति करता छूटे म्हारां प्राण, प्रभुजी एवो मांगू छूं।
रहे जन्म-जन्म थारो साथ, प्रभु जी एवो मांगू छूं।।टेर।।

थारो मुखड़ो मनोहर जोया करूं, रात दिवस रटण थारों करिया करूं।
श्वासों श्वास रहे थारों ध्यान, प्रभु जी एवो मांगू छूं।।

म्हारी आशा, निराशा करशो नहीं, म्हारा अवगुण हैय्या में धरशो नहीं।
अंत समय रहें थारों ध्यान, प्रभुजी एवो मांगू छूं।।

थारी भक्ति रो रंग मने लागी गयो, भय जन्म-जन्म रो भाग गयो।
दोड़यो आऊं मैं थारें द्वार, प्रभुजी एवो मांगू छूं।।

म्हारा पाप ने आप क्षमाई दीजो, आ बाल ने थारों बनाई दीजो,
दे दो दर्शन रा अर्विदान, प्रभु जी एवो मांगू छूं।।

दर्शन, ज्ञान, चरित्र प्रभु मुझने मिले, एवी आशा धरू प्रभु आप कने।
आपो शिवपुर नो संगात, आपो मुक्तिपुरी ना वास, प्रभु जी एवो मांगू छूं।।

49. चेतन राम चेतन राम

चेतन राम चेतन राम, जागों प्यारे चेतन राम
भोर हुई सब प्राणी जागे, अपने-अपने धंधे लागे।
तुम भी बढ़ो चलो अब आगे, दूर प्रभु का धाम।।1।।
चेतन.....।

सुस्त हुए क्यों कदम तुम्हारे, लगते हो क्यों हारे-हारे।
अभी दूर है मंजिल प्यारे, अध बिच कहाँ मुकाम।।2।।
चेतन.....।

उठो संभालो अपनी गठरी, संग में ले लो भक्ति गगरी।
कूच करो पहुँचों शिवनगरी, प्रभु पद लो विश्राम।।3।।
चेतन.....।

सुख सागर जीवन सर्वोदय, भेद ज्ञान विज्ञान महोदय।
मानव जीवन मिला पुण्योदय, करो विचक्षण काम।।4।।
चेतन.....।

दुर्जन, दुष्ट, क्रूर, हिंसक पापी से पापी व्यक्ति के प्रति भी हमारे मन में घृणा और द्वेष न हों, अपितु उसके प्रति अनुकंपा और मंगलभावना के भाव हों। किसी न किसी पूर्व भव में हमारी स्थिति उससे भी खराब हो सकती है। जिस प्रकार हमें सम्यक् सहयोग मिलने से जैसे हमारे अन्दर बदलाव आया, वैसा भविष्य में जिससे हम घृणा कर रहे हैं उसमें भी बदलाव आ सकता है।

50. दिन रात मेरे स्वामी

दिन रात मेरे स्वामी, मैं भावना ये भाऊँ।
देहान्त के समय में, तुझको न भूल जाऊँ

हो कोई शत्रु मेरा, संतुष्ट उसको कर दूं।
समता का भाव धरकर, सबसे क्षमा कराऊँ।।1।।

त्यागूं आहार पानी, औषध विचार अवसर।
टूटे नियम न कोई, दृढ़ता हृदय में लाऊं।।2।।

जागे नहीं कषायें, नहीं वेदना सतायें।
तुमसे ही लौ लगी हो, दुर्ध्यान को भगाऊँ।।3।।

आत्म स्वरूप अथवा आराधना को विचारूँ।
अरिहंत, सिद्ध साधु रटना यही लगाऊँ।।4।।

गुरू देव पास में हो, उपदेश दे रहे हो।
वो सावधान रखें, गाफिल न होने पाऊँ।।5।।

जीने की हो न वांछा, मरने की हो न इच्छा।
परिवार मित्र जन से, मैं मोह को हटाऊँ।।6।।

भोगे जो भोग पहले, उनका न होवे सुमरन।
मैं राज्य संपदा या पद, इन्द्र का न चाहूँ।।7।।

सम्यक्त्व का हो पालन, हो अंत में समाधि।
शिवराम प्रार्थना यह, जीवन सफल बनाऊँ।।8।।

51. दुःख सुख में मैं रहूं एकसा

दुःख-सुख में मैं रहूं एकसा, दो मुझकों ऐसा वरदान।
हे मेरे पावन परमेश्वर, दूर करो मेरा अज्ञान।
शांत स्वभावी, सेवाभावी, दृढ़ श्रद्धालु बनूं महान।।1।।
हे मेरे.....।

सत्य अहिंसा मय जीवन हो, छुए नहीं तनिक अभिमान।
स्वाभिमान को नही भुलाऊँ, धर्मनिष्ठ होऊँ बलवान।।2।।
हे मेरे.....।

करूणा, दया और अनुकम्पा, रहे हृदय में आठों याम।
पर उपकार भावना मन में, जागृत रहे, रहूँ निष्काम।।3।।
हे मेरे.....।

छल, प्रपंच, पाखण्ड बुराई, पर निंदा से रहकर दूर।
रहूं सदा कर्त्तव्य परायण, मिले शांति मन को भरपूर।।4।।
हे मेरे.....।

आवश्यकता से अधिक परिग्रह, रहें कभी न मेरे पास।
समता रस में सरोबार हो, खोऊँ नहीं आत्म विश्वास।।5।।
हे मेरे.....।

विनयशील गुणवान बनूं मैं, विज्ञ विवेकी प्रज्ञावान।
गुणी जनों से प्रेम भावना, सुनो प्रार्थना है भगवान।।6।।
हे मेरे.....।

52. मेरा मन हो कमजोर नहीं

मेरा मन हो कमजोर नहीं, प्रभु मांगू कुछ भी और नहीं....

सुख-दुःख आते जाते हैं, वे अपना फर्ज निभाते हैं।
मन कभी मचाये शोर नहीं, मेरा मन हो कमजोर नहीं।।1।।

मैं कब कहता यह रोग न हो, कहता न विरोध-वियोग न हो।
हो मन का इन पर गौर नहीं, मेरा मन हो कमजोर नहीं।।2।।

हो काम क्रोध का बल न प्रबल, मन कभी न हो मेरा दुर्बल।
खंड़ित हो व्रत की कौर नहीं, मेरा मन हो कमजोर नहीं।।3।।

संयम व्रत में हो दाग नहीं, दूषित हो त्याग वैराग्य नहीं,
रोवे यह मन का मोर नहीं, मेरा मन हो कमजोर नहीं।।4।।

दुर्बलता दासी दोषों की, दुर्बलता जड़ अफसोसों की।
होने देती सुख भोर नहीं, मेरा मन हो कमजोर नहीं।।5।।

मन में बल हो, बल वाणी में, मैत्री हो प्राणी-प्राणी में,
क्यूं गूंजे स्वर चहुं और नहीं, मेरा मन हो कमजोर नहीं।।6।।

53. जाना नहीं निज आत्मा

जाना नहीं निज आत्मा, ज्ञानी हुए तो क्या हुए।
ध्याया नहीं, सिद्ध आत्मा, ध्यानी हुए तो क्या हुए।।
जाना नहीं.....।

ग्रन्थ सिद्धान्त पढ़ लिये, शास्त्रवान बन गये।
आतम रहा बहिरात्मा, पंडित हुए तो क्या हुए?
जाना नहीं.....।

पंच महाव्रत आदरे, घोर तपस्या भी करें
मन की कषाय ना मिटी, साधु हुए तो क्या हुए?
जाना नहीं.....।

माला के दाने फेरते, मनवा फिरे बाजार में
मन का न मनका फेरते, जपियाँ हुए तो क्या हुए?
जाना नहीं.....।

गा के बजा के नाच के, पूजन भजन सदा किये।
भगवन हृदय में ना बसे, भक्त हुए तो क्या हुए?
जाना नहीं.....।

करते ना गुरुवर दर्श जो, खाते सदा अभक्ष्य को
दिल में जरा दया नहीं, मानव हुए तो क्या हुए?
जाना नहीं.....।

मान बढ़ाई के लिये, द्रव्य हजारों खर्चते
भाई तो भूखा मर रहा, दानी हुए तो क्या हुए?
जाना नहीं.....।

अवगुण पराये हेरते, दृष्टि न अन्तर फेरते
शिवराम एक चित्त को, शायर हुए तो क्या हुए?
जाना नहीं.....।

दुनिया में पाप छा रहा, घर-घर में फूट चल रही,
माता से पुत्र जुदा हुए, पुत्र हुए तो क्या हुए?
जाना नहीं.....।

54. जीवन में शांति न जो लाता

जीवन में शांति न जो लाता, वह धर्म नहीं बस धोखा है।
जीवन में क्रान्ति न जो लाता, वह धर्म नहीं बस धोखा है।।
जीवन में.....।

मंजिल की आशा से राही, जो पथ पर दौड़ा जाता है।
जो मार्ग न मंजिल को पाता, वह मार्ग नहीं बस धोखा है।।
जीवन में.....।

लाखों की पूंजी लगाकर के, है कारोबार किया भारी।
जो मूल रकम को खा जाता, व्यापार नहीं वह धोखा है।।
जीवन में.....।

औषध खाने का लाभ तभी, जो हष्ट-पुष्ठ तन बनता है।
जो दिन-दिन तन छिजता जाता, वह दवा नहीं बस धोखा है।।
जीवन में.....।

बैठे हो खाना खाने को, भोजन भी नाना विध खाये।
जो क्षुधा शांत नहीं कर पाता, वह भोजन नहीं बस धोखा है।।
जीवन में.....।

चंदन है संत वही सच्चा, जो निज प्रिय जन कल्याण करे।
जो माया में फंसता जाता, वह संत नहीं बस धोखा है।।
जीवन में.....।

55. हूँ स्वतंत्र निश्चल, निष्काम

हूँ स्वतंत्र निश्चल, निष्काम, ज्ञाता-दृष्टा आतम राम।
मैं वह हूँ जो है भगवान, जो मैं हूँ वह है भगवान।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यह राग वितान।।
मम स्वरूप है सिद्धि समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान।
किन्तु आस वश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अज्ञान।।
हूँ स्वतंत्र.....।

सुख दुःख दाता कोई न आन, मोह राग यह दुःख की खान।
निज को निज, पर को पर जान, फिर दुःख का नहीं लेश निशान।
जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम,विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम।
राग त्याग पहुँचू निज धाम, आकुलता का फिर क्या काम।
दूर करो पर कृत परिणाम, सहजानंद रहूं अभिराम।।
हूँ स्वतंत्र.....।

56. जिसको तूं खोज रहा बंधे

जिसको तूं खोज रहा बंधे, वह मालिक तेरे अन्दर है।
बाहर के मंदिर कृत्रिम है, सच्चा मंदिर तो अन्दर है।। टेर।।

ले पत्र, पुष्प, फल,धूप, दीप, तूं किसकी पूजा करता है?
सचमुच जिसकी पूजा होती है, वह दिव्य देव तो अन्दर है।। 1।।

धोने को अपना पाप मैल, क्यों तीर्थो बीच भटकता है?
जिसमें! जिसमें सब पाप मैल धुलता, वह विमल तीर्थ तो अन्दर है।। 2।।

गंथों, पंथों का गौरव तूं, चिल्ला-चिल्ला कर गाता है।
जिसमें! जिससे सब ग्रंथि भेद होता, वह अलख ग्रंथ तो अन्दर है।। 3।।

बिना लक्ष्य की दौड़ धूप, कुछ भी परिणाम ना लायेगी।
वह बाहिर कैसे मिल सकती, जो चीज आप के अन्दर है।।4।।

बाहर के झंझट छोड़ जोड़, चन्दन अपने से अपने को।
जिसको! जिसको है वन्दन बार-बार वह चिदानंद तो अन्दर है।।5।।

57. खुद को देखो

खुद को देखो, खुद से देखो, होगा खुद का ज्ञान।
सार यह साधना का, धर्म आराधना का।।

देखा है हमने अब तक, बाहर के संसार को,
ओढ़े हुए हैं अपने, ऊपर झूठे अहंकार को।
अन्दर बहता सुख का दरिया, कर लो रे पहचान।।
सार यह.....।

देखोगे अपने भीतर, तब ही सच्चाई जान पाओगे,
केवल बाहर से ही, करके भरोसा धोखा खाओगे।
खोज निकालो, छुपा खजाना, बन जाओ धनवान।।
सार यह.....।

बाहर टिकी जो नजरें, उनको भी भीतर अब मोड़ दें,
मन के ये तार प्रभु, पावन चरणों से जोड़ दो।
अवसर आया छोड़ गरल को, कर लों अमृत पान।।
सार यह.....।

58. प्रेमी बनकर प्रेम से

प्रेमी बनकर प्रेम से, जिनवर के गुण गाया कर।
मन मंदिर में गाफिले, झाडू रोज लगाया कर।।टेर।।

सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बर्बाद तूं बन्दे, होता अपने आप रहा।
सबसे पहले उठकर, मन मंदिर में जाया कर।।
मन मंदिर.....।

भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी, तेने रोटी खाई क्या।
दुखिया पास पड़ा है तेरे, तेने मौज उड़ाई क्या।
सबसे पहिले पूछ कर, भोजन तूं फिर खाया कर।।2।।
मन मंदिर.....।

नरतन के चोले को पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का, मिलता जब तक मेल नहीं।
नरतन पाने के लिये, उत्तम कर्म कमाया कर।।3।।
मन मंदिर.....।

देख दया उस वीर प्रभु की, जिनवाणी का ज्ञान दिया।
जरा सोचले अपने मन में, कितनों का कल्याण किया।
सब कामों को छोड़ कर, उसको ही तूं ध्याया कर।।4।।
मन मंदिर.....।

59. आज अन्धेरे में हैं हम इन्सान

आज अन्धेरे में हैं हम इन्सान, ज्ञान का सूरज चमका दे भगवान
भटक रहें हम राह से अपनी, भगवन राह दिखा दे,
कदम-कदम पर किरण बिछा दे, भगवन किरण बिछा दे।
इन अंखियन को प्रभु मिला दे, ज्योति से पहचान ।।
आज अन्धेरें में.....।

हम तो हैं सन्तान तिहारी, प्रभु सन्तान तिहारी,
तेरी दया के हम अधिकारी, प्रभु हम हैं अधिकारी,
दुनियाँ होवे सुखी हमारी, ऐसा दो वरदान।।
आज अन्धेरें में.....।

60. आगे जाणो चेतनियाँ

आगे जाणो चेतनियाँ साथे खर्ची ले लीजो।
खर्ची लिया पेला ही, मनड़ो वश में कर लीजो।
साथ चाले धर्म यां सूं, प्रीति कर लीजो।
शुभ कर्म कमाई, चेतन थैली भर ली जो।।
आगे जाणों.....।

आत्म शुद्धि रे खातिर, थे तो तपस्या कर लीजो।
थे तो क्षमा करी ने, माया मद ने हर ली जो।।
आगे जाणों.....।

पायो मनुष्य जन्म, रूढ़ी मारी सुण लीजो।
थे तो करनी करवां में, चेतन देरी मत कीजो।।
आगे जाणों.....।

शिक्षा नाथु मुनि री थारें, हृदय धर लीजो।
प्रभु भक्ति करी ने मुक्ति, बेगी ले ली जो।।
आगे जाणों.....।

61. प्रभु मुझे, भव-भव के बंधन से छुड़ाना

प्रभु मुझे, भव-भव के बंधन से छुड़ाना-2,
हाथ पकड़ के, उठाना-उठाना।।प्रभु मुझे.....।

भव-भव भटक-भटक मैं हारा, सहे दुःख अनन्त अपारा,
मात-पिता, पति-सुत, परिवारा, नहीं किसी ने भी दिया सहारा,
तेरी शरण हूँ निभाना, निभाना।।प्रभु मुझे.....।

मोह की सेना लूटे हमारा, निश दिन आत्म वैभव सारा,
फैला, मिथ्यात्व अज्ञान अंधेरा, काम क्रोध मद डाला है डेरा,
जल्दी ही नाथ बचाना, बचाना।।प्रभु मुझे.....।

सुख सागर प्रभु पुण्य से पाया, रत्न चिंता मणी हाथ में आया,
चरण शरण में आश्रय दे अब, यत्न से दूर करो मोह माया,
विचक्षण की नैया तिराना, तिराना।।प्रभु मुझे.....।

62. क्षमा कीजिये, सबसे क्षमा चाहता हूँ

क्षमा कीजिये सबसे क्षमा चाहता हूँ, क्षमा करके सबसे क्षमा मांगता हूँ।

तप और संयम का सार है उपशम, श्रद्धा का श्रृंगार है उपशम।
ज्ञान की बगिया, बहार है उपशम, सत्य ये समझकर क्षमा मांगता हूँ।।

राग द्वेष का मैल मिटाकर, वैर विरोध को दूर हटाकर।
मैत्री भाव की ज्योति जगाकर, हृदय शुद्ध करके क्षमा चाहता हूँ।।

शांति समता को अपनाऊँ, अपराधों की क्षमा में चाहूँ।
अन्तःकरण से सबको खमाऊँ, प्रमुदित हो सबसे क्षमा मांगता हूँ।।

जैन धर्म का प्राण क्षमा है, जीवन की मुस्कान क्षमा है।
मानवता का शान क्षमा है, केवल मुनि मैं क्षमा चाहता हूँ।।

शास्त्र से ज्यादा चर्चा, अब शस्त्र की होने लगी है,
प्रदूषण के बोझ को यह, प्रकृति ढ़ोने लगी है।
इस कदर अब विकृति, छा गई है मन में,
आदमी के तन को छूकर, हवाएं भी अब रोने लगी हैं।।

63. कौन सुनेगा, आज यहाँ पर पीर को?

कौन सुनेगा, आज यहां पर पीर को।
भूल चुका है आज मनुज, श्री राम कृष्ण महावीर को।।

कभी जटायु की सेवा में, राम बलि-बलि जाते थे।
घायल पक्षी को हाथों में, ले आंसू टपकाते थे।
आज खड़ा है भाई आगे, भाई ले शमशीर को।।1।।
भूल चुका.....।

कभी सुदामा के चावल खा, नटवर हर्षित होते थे।
दीन हीन ब्राह्मण के पग को, नयन नीर से धोते थे।
आज दुःखी को ठुकराते हैं, धिक्कारें तकदीर को।।2।।
भूल चुका.....।

कभी वीर चन्दनबाला से, उड़द बाकले पाये थे।
चण्डकोशिया विष के बदले, अमृत को बरसाये थे।
आज मनुज बरसाते हैं, कटु वाणी के विष तीर को।।3।।
भूल चुका.....।

राम-कृष्ण-महावीर की माला, जपने वालों सुन लेना।
उनके उत्तम जीवन से कुछ, शिक्षाएँ तुम चुन लेना।।
'कुमुद मुनि' कहे, जीवन बदलो, पियो प्रेम के नीर को।।4।।
भूल चुका.....।

64. नित्य शाम को जीवन खाता

नित्य शाम को जीवन खाता, खोलों करो विचार।
श्रावक यह तेरा आचार-2

मोक्ष मार्ग में चरण बढ़ाये, कितने दो या चार।
करले बारम्बार विचार-2।।टेर।।

जो शुभ निश्चय किये सवेरे, कितने पूर्ण हुए वे तेरे।
विघ्न देखकर घबराया, या डट कर रहा तैयार।।1।।
करले बारम्बार.....।

कितने कार्य किये पुण्यों के, कितने कार्य किये पापों के।
देख तोल कर पुण्य पाप का, किधर है कितना भार।।2।।
करले बारम्बार.....।

कितने अवगुण त्यागे तूंने, कितने सद्गुण धारे तूंने।।
तूं-तूं मैं मैं व्यर्थ लगा कर, अथवा की तकरार।।3।।
करले बारम्बार.....।

कितना संग किया गुणियों का, कितना लाभ लिया मुनियों का।
खेल तमाशे ठठे हंसी में, मस्त रहा बेकार।।4।।
करले बारम्बार.....।

मानव जीवन सफल बनाले, इस नर तन से लाभ उठाले।
लक्ष चौरासी योनी में, यह मिले न बारम्बार।।5।।
करले बारम्बार.....।

संवर करले तप आदर ले, पुण्य कमाले पाप नसाले।
'केवल' कहते पारस सुन रे, यह जीवन है दिन चार।।6।।
करले बारम्बार.....।

65. प्रेम बढ़ालो प्रेम बढ़ालो

प्रेम बढ़ालो प्रेम बढ़ालों प्रेम करे कल्याण, प्रेम ही जीवन का उत्थान।
प्रेम ही शक्ति, प्रेम ही भक्ति, प्रेम ही अमृत पान।।
प्रेम ही जीवन.....।

उसे कभी मैं हृदय न कहता, जिसमें प्रेम स्रोत नहीं बहता।
वह तो पत्थर सम ही जचता, हृदय शुष्क कठोर ही रहता,
दिल तो वही कि जिसमें हरदम, करे प्रेम मुस्कान।।
प्रेम ही जीवन.....।

प्रेम ही जीवन उच्च बनाता, जीवन में ज्योति चमकाता।
सारी समस्याएँ हैं सुलझाता, जनगण प्यारा प्रेम बढ़ाता।
खरा मोहनीय मंत्र प्रेम है, चाहे करो पहचान।।
प्रेम ही जीवन.....।

सुख शांति का प्रेम प्रदाता, आत्मोन्नति का प्रथम विधाता।
प्रेम क्षेम आनन्द जगाता, प्रेम ही सारे कष्ट मिटाता।
पतितो तारक, प्रेम है पावन, प्रेम ही है भगवान।।
प्रेम ही जीवन.....।

राग द्वेष जब शेष न आये, मान क्लेश लवलेश न पाये।
सब जीवों की उन्नति चाहे, मैत्री भाव जीवन में लाये।
तब होती है प्रेम साधना, सुनो सभी इन्सान।।
प्रेम ही जीवन.....।

प्रेम सुधा का पीकर प्याला, वीर बुद्ध और कृष्ण निराला।
भारत में कर दिया उजाला, कई दुःखियों का संकट टाला।
'कुमुद' पहचानों प्रेम तत्व को, गाओ रे प्रेम का गान।।
प्रेम ही जीवन.....।

66. यह मीठा प्रेम का प्याला

यह मीठा प्रेम का प्याला,कोई पियेगा किस्मत वाला।
यह सत्संग वाला प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला।। टेर।।

प्रेम गुरु है प्रेम है चेला, प्रेम धर्म है प्रेम का मैला।
प्रेम की फेरो माला, कोई फेरेगा किस्मत वाला।। 1।।
यह मीठा.....।

प्रेम बिना प्रभु भी नहीं मिलते, मन के कष्ट कभी नहीं टलते।
प्रेम करे उजियाला, कोई करेगा किस्मत वाला।। 2।।
यह मीठा.....।

प्रेम का गहना प्रेमी पावे, जन्म-मरण का दुःख मिटावे।
कटे कर्म जंजाला, कोई काटेगा किस्मत वाला।। 3।।
यह मीठा.....।

प्रेमी सबके कष्ट मिटावे, लाखों से दुराचार छुड़ावें।
प्रेम में हो मतवाला, कोई होवेगा किस्मत वाला ।।4।।
यह मीठा.....।

मुक्ति का सुख प्रेमी पावे,नरकों में हरगिज नहीं जावे।
प्रेम का भोजन आला, कोई करेगा किस्मत वाला।। 5।।
यह मीठा.....।

जो किसी वस्तु का दुरुपयोग करता है, प्रायः वह वस्तु उसको पुनः सरलता से प्राप्त नहीं होती। आत्मा जब तक मोक्ष को प्राप्त नहीं कर लेती उसको शरीर अर्थात् स्पर्शनेन्द्रिय तो मिलेगी ही। एकेन्द्रिय जीवों की विराधना से भविष्य में स्पर्शनेन्द्रिय तथा काय बल प्राण, आयुष्य एवं श्वासोश्वास बल प्राण कमजोर मिलेंगे। शरीर साथ नहीं देगा। सहन शक्ति कम होगी। एकेन्द्रिय जीव की द्रव्य विराधना से पूर्णतः बचना तो कठिन है, परन्तु यतना पूर्वक जीवन जीने से उसमें कमी तो हो ही सकती है। भाव प्राणों की विराधना, द्रव्य प्राणों की विराधना से भी ज्यादा खतरनाक होती है। अतः कम से कम प्रवृत्ति करते समय हम भाव विराधना से तो अवश्य बचने का सम्यक् पुरुषार्थ करें।

67. उठ भोर भई ठुक जाग

उठ भोर भई ठुक जाग सही, भजवीर प्रभु भजवीर प्रभु।
अब नीन्द अविद्या त्याग सही, भजवीर प्रभु भजवीर प्रभु।।

जग जाग उठा तूं सोता है, अनमोल समय यह खोता है।
तूं काहे प्रमादी होता है। भजवीर प्रभु भजवीर प्रभु।।

यह समय नहीं है, सोने का, है वक्त पाप मल धोने का।
अरू सावधान चित्त होने का। भजवीर प्रभु भजवीर प्रभु।।

तूं कौन कहां से आया है, अब गमन कहां मन लाया हैं।
टुक सोच ये अवसर पाया है। भजवीर प्रभु भजवीर प्रभु।।
रे चेतन चतुर हिसाब लगा, क्या खाया खर्चा लाभ हुआ।
निज ज्ञान जमा तूं संभाल लिया, भजवीर प्रभु भजवीर प्रभु।।

गति चार चौरासी लाख रुला, यह कठिन-कठिन शिव राह मिला।
अब भूल कूमार्ग, विषेमत जा, भजवीर प्रभु भजवीर प्रभु।।

68. जीवन सफल बनाना

जीवन सफल बनाना, बनाना प्रभु, वीर जिनराज जी ।।टेर।।
मन मन्दिर में घोर अन्धेरा, ज्ञान की ज्योति जगाना, जगाना प्रभु।।1।।
वीर जिनराज.....।

बीच भंवर में नैया फंसी है, झट-पट पार लगाना, लगाना प्रभु।।2।।
वीर जिनराज.....।

न्याय मार्ग का पक्ष न छोडूँ, चाहे दुश्मन हो सारा जमाना, जमाना प्रभु।।3।।
वीर जिनराज.....।

प्राणी मात्र को सुख उपजाऊँ, चाहूँ न किसी का चित्त दुःखाना, दुःखाना प्रभु।।4।।
वीर जिनराज.....।

मैं भी तुमसा जिन बन जाऊँ, परदा दूरी का हटाना, हटाना प्रभु।।5।।
वीर जिनराज.....।

सुन्दर पत्नी पसन्द से मिल सकती है, परन्तु माँ-बाप का सान्निध्य पुण्य से ही मिलता है। पसन्द से मिलने वाली पत्नी के लिए पुण्य से मिलने वालों की उपेक्षा क्यों? और उन्हीं माता-पिता से बिना मजबूरी अलग रहना कितना तर्कसंगत है? प्रत्येक पुत्र के लिए यह चिन्तन का विषय है।

69. उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।।
उठ जाग मुसाफिर.....।

उठ नींद से अँखियां खोल जरा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत है तूं सोवत है।।
उठ जाग मुसाफिर.....।

जो कल करना सो आज कर ले, जो आज करना सो अब कर ले।
जब चिड़िया ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है।।
उठ जाग मुसाफिर.....।

नादान भुगत अपनी करणी, है पापी पाप से चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी शीश धरी, अब शीश पकड़ क्यों रोवत है।।
उठ जाग मुसाफिर.....।

70. सच्चा जैन उसे ही कहना

सच्चा जैन उसे ही कहना, जो जीव दया प्रतिपालक है।
निर्लोभी और कपट रहित जो, राग द्वेष नहीं रखता है।
मन-वचन-काया से निर्मल , तृष्णा को जो जीतता है।।
सच्चा जैन उसे.....।

हिंसा, झूठ और चोरी छोड़े, परनारी नहीं देखता है।
पर द्रव्य को तृण सम ही मानें, विषयाशक्ति न रखता है।।
सच्चा जैन उसे.....।

समभावी और आत्म ज्ञानी, पर निंदा का त्यागी है।
माया, मोह शत्रु को जीतकर, श्रद्धा हृदय में धरता है।।
सच्चा जैन उसे.....।

अनुपम धैर्य, वाणी गंभीर, दूर मान किया जिसने है।
अरिहंत प्रेम से, होता जीवन धन्य उसी का है।।
सच्चा जैन उसे.....।

जब तक हमारा ज्ञान, दर्शन और चारित्र अथवा आचरण सम्यक् तथा मानव जीवन के सही लक्ष्य के अनुरूप नहीं होगा तब तक हमारा जीवन स्थायी रूप से स्वस्थ, सुखी और सफल नहीं हो सकता।

71. जहाँ याद करो भगवान वहीं

महलों में नहीं, कुटिया में नहीं, जहाँ याद करो भगवान वहीं।
भगवान तो प्रेम के वश में है, वो बसते सबके दिल में है।। टेर।।

क्यूं पाप कमाकर धन जोड़ा, कौड़ी के लिए नाता तोड़ा।
सोने में नहीं, चांदी में नहीं, जहाँ याद करो भगवान वहीं।। 1।।

क्यूं छिपकर फेर रहा माला, तुझे देख रहा अन्दर वाला,
जंतर में नहीं, मंतर में नहीं, जहाँ याद करो भगवान वहीं।। 2।।

पाताल, गगन और जल थल में, भक्तों के लिए आये पल में।
गंगा में नहीं, यमुना में नहीं, जहाँ याद करो भगवान वहीं।। 3।।

सब जग में दर्शन को फिरते, क्यूं याद नहीं दिल में करते।
मंदिर में नहीं, मस्जिद में नहीं, जहाँ याद करो भगवान वहीं।। 4।।

72. महाक्रोध से लड़ाई महाधीर की

महाक्रोध से लड़ाई महाधीर की, यह कहानी है श्रमण महावीर की
अष्ट कर्मों को मिटाने, आत्म ज्योति को जगाने
भगवान वर्धमान तप कर रहें,
कभी जंगल उद्यान, कभी शून्य श्मशान,
शांत एकान्त जगह में ध्यान धर रहें,
मन अमल-विमल, तन मेरू सा अचल,
नहीं परवाह करें, दु:ख पीर की।।
यह कहानी है.....।

राजगृही के निकट, चण्ड कौशिक विकट,
एक नाग रहा नित्य फुंफकारता,
उससे डरे पशु-पक्षी, डरे नर-नारी पंथी,
नहीं किसी भी शक्ति से वह हारता,
सर्प देता है व्यथा, जानी प्रभु ने कथा,
चले समझाने गति ले समीर की।।
यह कहानी है.....।

वह नाग अति काला, दृष्टि विष मतवाला,
देख बांबी पे प्रभु को खड़े जल गया,
उसने फन फैलाया, झूम-झूम लहराया,
कई बार ऊँचा धरती से उछल गया, तेज दृष्टि से निहार,
डस लिया कई बार, पीड़ा हुई विष बुझे तीर की।।
यह कहानी है.....।

कृपा सिंधु मुस्काये, ध्यान खोल फरमाये, शांत नागराज,
शांत-शांत-शांत हो, क्रोध त्याग दो सुजान, क्षमामृत करो पान,
मत जीवन बिगाड़ो पथ भ्रान्त हो,
सुनके प्रभु के उद्‌गार, किया नाग ने उद्धार,
'केवल' मुनि शांति धीर हिम नीर की।।

यह कहानी है.....।

73. दे दे मेरे अधरों को ज्ञान स्वर

दे दे मेरे अधरों को ज्ञान स्वर, यही मांगता हूँ मैं तुझ से वर,
निर्मल विचारों की सृष्टि दे, व्यवहार विद्या की दृष्टि दे,
पहचान मैं अपने को लूँ, मुझे ऐसी अन्तर दृष्टि दे,
चलू सत्य न्याय के मार्ग पर, यही मांगता हूँ मैं तुझ से वर।।

मरुस्थल में हो या मधुबन में हो, किंतु मन अनुशासन में हो,
प्रतिबिंब हर आदर्श का, मेरे छोटे से जीवन में हो,
शुद्ध आचारण में ढ़ले उमर, यही मांगता हूँ मैं तुझ से वर।।

वनवासी सा यह तन मेरा, रहे तेरे जैसा ही मन मेरा,
जलूं और जलकर प्रकाश दूँ, दिये जैसा हो जीवन मेरा,
बढ़े ज्ञान की ही मेरी डगर, यही मांगता हूँ मैं तुझ से वर।।

74. वरदान मांगता हूँ

वरदान मांगता हूँ, आगे मुझे बढ़ा दो।
शिव शिखर पे चढ़ा दो।।टेर।।

वरदान मांगता.....।

अनुस्रोत की लहर में, दिन रात बह रहा हूँ।
दे दिव्य दृष्टि भगवन, प्रतिस्रोत में लगा दो।।1।।

वरदान मांगता.....।

जिस तिमिर में निरन्तर, गुमराह हो रहा हूँ।
आलोक भर हृदय में, रास्ता मुझे दिखा दो।।2।।

वरदान मांगता.....।

दिल में भरा गरल जो, उसको निकाल फेंकूँ।
ओ धर्म देव ऐसा, अमृत मुझे पिला दो।।3।।

वरदान मांगता.....।

जिस देह दुःख को लख कर, संसार कांपता है।
उसको मैं सुख समझ लूं,ऐसी कला सिखा दो।।4।।
वरदान मांगता.....।

अनुभव हृदय की वाणी, मैं और कुछ न चाहूँ।
अपने स्वरूप में ही, तन्मय मुझे बना दो।।5।।
वरदान मांगता.....।

75. जिया कब तक उलझेगा

जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में।
कितने भव बीत चुके, संकल्प-विकल्पों में।।

भटका चउ गलियों में, भव भ्रमण अनन्त किये।
सुख पाने के खातिर, क्या-क्या पाप किये।
पापों के फल कड़वे,क्यों उलझा विकल्पों में।।1।।
जिया कब.....।

कभी जन्म का दुःख झेला, कभी मरण का दुःख पाया।
कभी रोग बुढापे से, पीड़ित हुई ये काया।
अब चेत अरे चेतन, क्या रखा विकल्पों में।।2।।
जिया कब.....।

सांसारिक सुख पाकर, तप संयम को भूला।
ले डूबेगा तुझ को, किस सुख में तूं फूला।
ये जीवन बीत रहा, झूठे संकल्पों में।।3।।
जिया कब.....।

क्या पाया कुंडरीक ने, करके संयम का त्याग।
आखिर दुर्गति पाई, कर काम भोग से राग।
पहचान लक्ष्य अब तो, क्यों खोया विकल्पों में।।4।।
जिया कब.....।

'गौतम' से प्रभु कहते, दुर्लभ दस बोल मिले।
अब हो न प्रमाद कहीं, फिर से ना पाप फलें।
ये कदम न रुक पाये, सच्चे संकल्पों में।।5।।
जिया कब.....।

दृढ़ संकल्प से ही प्रत्येक समस्या का समाधान सरलता से संभव हो सकता है। मन के लँगड़े व्यक्ति को स्वर्ग के हजारों देवता भी अपने पैरों से नहीं चला सकते।

76.सद्गुराँ री चोट, थारें लागी कोनी रे

सद्गुराँ री चोट थारे लागी कोनी रे, प्रेम चिनगारी थारे जागी कोनी रे

समता रे भेष लेवे, रोज री सामायिक,
पाप री कमाई पण त्यागी कोनी रे।।
प्रेम चिनगारी.....।

करे उपवास, बेला, प्यास भी निकाले,
पण भूण्डी भूख रूपिया री भागी कोनी रे।।
प्रेम चिनगारी.....।

मांथा ने हिलावे राग-राग में मिलावें,
पण मायलो बाबलियो, वैरागी कोनी रे।।
प्रेम चिनगारी.....।

''चन्दन'' कल्याण पण किण विध होवे,
आत्मा रो सोनो, थारो सागी कोनी रे।।
प्रेम चिनगारी.....।

77. मत कर रे तूँ अशुभ

मत कर रे तूँ अशुभ कर्म जीवड़ा मत कर रे.....।

चार गति में जीव ने रुलावे, चौरासी मायने भटकावे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

पांच जाति में छः काया में, पांच इन्द्रिय के वश होवे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

पर्याप्ति पूरी नहीं पावे, प्राण शरीर की हाण होवे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

योग उपयोग अधूरे मिलते, अष्ट कर्म जब गहरावे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

गुण ठाणा ऊपर नहीं आते, विषय-विकार में फंस जावे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

मिथ्यातम है घोर अंधेरा, तत्त्व समझ में नहीं आवे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

आत्मा-परमात्मा नहीं होवे, चौबीस दंडक में दंड पावे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

लेश्या दृष्टि शुभ नहीं रहते, ध्यान, अशुभ में ही जावे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

षट् द्रव्यों का बोध न होवें, राशि फांसी बन जावे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

व्रत महाव्रत स्वीकार न होवें, विकल्पों में मन उलझ जावे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

चारित्र है सार ज्ञान का, भाव, जीवन में नहीं आवे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

पच्चीस बोल के भाव सुनावे, अन्दर मन्दिर बन जावे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

'सुमति' शुभ हो, गुणी अब बन जा, कुमति अशुभ नहीं रह पावे।।
जीवड़ा मत कर रे.....।

78. माटी री आ काया

माटी री आ काया आखिर, माटी में मिल जावेला।
किण रो गर्व करे रे मनवा, किण पर तूं इतरावे है।।

इण तन ने मीठा माल खवा तूं, निश दिन पाले पोषे है,
अपणे एक पेट री आग बुझावण, किता रा मन रोसे है।
लेकिन घटका, खायोड़ा ने, एक दिन भटका आवेला।।
किण रो गर्व.....।

इण श्वासों रो विश्वास नहीं, कद आती जाती रूक जावे,
जीवन में झुकणो नहीं जाण्यो, वो जम रे आगे झुक जावे।
एक कदम तो उठग्यो, दूजो कुण जाणे, उठ पावेला।।
किण रो गर्व.....।

ओ चार दिना रो चांदणियो, फिर देर अंधेरी राता है,
घर की छतां सारे चूवें, ऐ श्रावण री वर्षाता हैं।
थोड़े जीणे रे खातिर, क्यूं भारी पाप कमावे है।।
किण रो गर्व.....।

जो बीत गई सो बात गई, अब पाछल खेती कर ले तूं,
मुनि रूप कहे, सद् गुण मोत्या सुं, खाली झोली भर ले तूं
सो जागे है सो पावे है, जो सोवे सो पछतावेला।।
किण रो गर्व.....।

79. धर्म प्रेम के हीरे मोती

धर्म प्रेम के हीरे मोती, संत बिखरे गली-गली,
ले लो रे कोई वीर का प्याला, आवाज लगाए गली-गली।

दौलत के दीवाने सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा,
धन दौलत और महल खजाना , पड़ा यही रह जायेगा।
अंत समय कोई साथ न देगा, आखिर होगी चला-चली।।
ले लो रे.....।

भाई-भतीजे सगे संबंधी एक दिन तुझे भुलायेंगे,
आज जो कहते हम तेरे हैं, आग में तुझे जलायेंगे,
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली।।1।।
ले लो रे.....।

जिसको अपना कहकर बंधु, तूं इतना इतराता है,
अंत समय कोई साथ न देगा, तूं ही अकेला जाता है,
दो दिन का यह चमन खिला है, मुरझायेगी कली-कली।।2।।
ले लो रे.....।

धर्म ध्यान और त्याग तपस्या, यही साथ में जाते हैं,
संग तूं कर ले साधु संत का, शास्त्र यहीं फरमाते हैं।
काल बली को भूल न जाना, सिर पर है तैयार खड़ी।।3।।
ले लो रे.....।

80. करो रक्षा विपत्ति से

करो रक्षा विपत्ति से, न ऐसी प्रार्थना मेरी।
विपत्ति से भय नहीं पाऊँ, प्रभु यह प्रार्थना मेरी।।टेर।।

मिले दुःख ताप की शांति, न ऐसी प्रार्थना मेरी।
सभी दुःख से विजय पाऊँ, प्रभु यह प्रार्थना मेरी।
करो रक्षा.....।

मदद पर कोई आ जावें, न ऐसी प्रार्थना मेरी,
न टूटे आत्म बल डोरी, प्रभु यह प्रार्थना मेरी।।

उठा ले भार मेरा तूं, न ऐसी प्रार्थना मेरी,
बनूं समर्थ उठाने में, प्रभु ये प्रार्थना मेरी,
बढ़े धन-धान्य और परिवार, न ऐसी प्रार्थना मेरी,
रहूं समभावी संतोषी, प्रभु यह प्रार्थना मेरी।।

मिलें सब मंत्र तंत्रादि, न ऐसी प्रार्थना मेरी,
खिले भक्ति से शक्ति, प्रभु यह प्रार्थना मेरी।।
सुख दिन में भजूं तुझको, न दु:ख की अंधेरी रातों में,
न आवे तुम प्रति शंका, प्रभु यह प्रार्थना मेरी।।

81. ज्योति से ज्योति जलाते चलो

ज्योति से ज्योति जलाते चलों, प्रेम की गंगा बहाते चलों।
राह में आए जो दीन दु:खी, सबको गले से लगाते चलो।।
प्रेम की गंगा.....।

जिसका न कोई संगी साथी, ईश्वर है रखवाला।
जो निर्बल है जो निर्धन है, वह है प्रभु का प्यारा।।
प्यार के मोती लुटाते चलो।। प्रेम की गंगा.....।

आशा टूटी ममता रूठी, रूठ गया है किनारा।
बन्द करो मत द्वार दया का, दे दो कुछ तो सहारा।
दीप दया का जलाते चलो।। प्रेम की गंगा.....।

82. बुढापा आने पर, हमें छोड़ देते हैं

मंदिरों में जा के दुआ मांगते हैं हम, तब कहीं जाके होता बच्चे का जन्म,
जन्म के प्रसव की पीड़ा को सहें, ममता की कहानी को किससे कहें,
सारे गम ऊँचे नीचे सहे जाते हैं, बंधनों में बंध के रह जाते हैं,
पर ये क्यों बंधनों को तोड़ देते हैं, बुढ़ापा आने पर हमें छोड़ देते हैं।।

पाल पोषकर इन्हें बड़ा करें हम, बड़ा करके पैरों पर खड़ा करें हम,
इन्हें कोई अहसास होने नहीं दें, खुद रोयें, पर इन्हें रोने नहीं दें।
इनके लिये तो करें जान कुर्बान, अपनी ये आन-बान-शान कुर्बान,
खुशियों से जिन्दगी को जोड़ देते हैं, बुढ़ापा आने पर हमें छोड़ देते हैं।।

छोटे होते हैं तो मीठा बोलते हैं ये, मम्मी कहकर जुबान खोलते हैं ये,
जैसे-जैसे होने लगते हैं जवान, चेहरे से जाने लगती है मुस्कान।
क्रूरता के भाव इन्हें आने लगते, अपना ये असर दिखाने लगते ,
रिश्तों के पथ को मोड़ देते हैं, बुढ़ापा आने पर हमें छोड़ देते हैं।।

देख लो जो वे शादी की भव्यता, मर मिट जाती बची खुशी सभ्यता,
पत्नी को मानते हैं परमात्मा, ओर भूल जाते हैं, ये मां की आत्मा,
सोचते नहीं, नहीं करते विचार, माता और पिता इन्हें लगते हैं भार,
जिम्मेदारियों से मुख मोड़ लेते हैं, बुढ़ापा आने पर हमें छोड़ देते हैं।।

सोचों कभी उम्र के भी तान तनेंगे, देह और उम्र में जब युद्ध ठनेंगे,
नश्वर शरीर युद्ध हार जायेंगा, तुमको भी कोई यूं विसार जायेगा,
यानि आप कर्मों के संताप बनोगे, आप भी कभी मां-बाप बनेंगे।।
काल चक्र सब को निचौड़ देते हैं, बुढ़ापा आने पर हमें छोड़ देते हैं।।

83. तन कोई छूता नहीं चेतन

तन कोई छूता नहीं, चेतन निकल जाने के बाद।
फेंक देते फूल को, खुशबू निकल जाने के बाद।। टेर।।

आज जो करते किलोले, खेलते हैं साथ में।
कल डरेंगे देखकर, तन निर्जीव हो जाने के बाद।। 1।।

बोलते जब तक सगे हैं, चार पैसे पास में।
नाम भी पूछे नहीं, पैसा निकल जाने के बाद।। 2।।

स्वार्थ प्यारा रह गया, असली मुहब्बत उठ गई।
भूल जाता मां को बच्चा, पर निकल जाने के बाद।। 3।।

इस अस्थिर संसार में, तूं क्यों घमण्डी हो रहा।
देख फिर पछताएगा, समय निकल जाने के बाद।। 4।।

कैसे सुखी होएगा, जो नहीं करता धर्म।
नरक में जाना पड़ेगा, पुण्य निकल जाने के बाद।। 5।।

84. आत्मा रे दाग, लगाइजे मती

आत्मा रे दाग लगाइजे मती, उजली ने मैली तूं बनाइजे मती,
आत्मा है थारी असली सोनो, सोने में खोट मिलाइजे मती।
आत्मा है थारी अमृत कूंपी, अमृत में जहर मिलाइजे मती।
आत्मा है थारी ज्ञान री दीवड़ी, फूंक मार इणने बुझाइजे मती।
आत्मा है थारी ज्ञान री गूदड़ी, पाप री खोली तूं चढ़ाइजे मती।
आत्मा है थारी ज्ञान री पावड़ी, मुक्ति चढ़ी ने पाछो आइजे मती।

संसार की असाता

खाना, पीना मौज उड़ाना, यह दुनिया का सार नहीं।
सोचो समझो, यह अनमोल समय, मिलता बारम्बार नहीं।।
पूर्व जन्म में किया-मिला, अब करो वही फल पाओगे।
जो गफलत के बीच रहे तो, मित्र बहुत पछताओगे।।
कभी निराश न हो जीवन में, कभी न दुःख में घबराना।
एक यही साधन है सुख का, अपना कर्त्तव्य किये जाना।।

85. चंदन सा बदन, चंचल यौवन

चंदन सा बदन, चंचल यौवन, पाकर के तेरा यह इतराना।
पर भूल ना जाना मत वाले, एक दिन तुझकों यहां से जाना।।
चंदन सा.....।

तन भी नश्वर, धन भी नश्वर, नश्वर जीवन की लाली है,
ले ज्योति जगा अन्तर मन में, वरना जायेंगा खाली है।
इस रंग रंगीली दुनियां में, अपने दिल को मत भरमाना।।
चंदन सा.....।

कुछ सोच समझकर ले पगले, क्यों व्यर्थ ये जन्म गंवाता है,
पाकर के मानव का भव, क्यों हंस-हंस कर पाप कमाता है।
तूं कौन कहां से आया है और आगे कहां ठिकाना है।।
चंदन सा.....।

जो बीत रही स्वर्णिम घड़ियां, फिर हाथ तेरे नहीं आयेंगी,
कर्मो के बंधन तोड़ कमल, सुख की सरिता लहरायेंगी।
मिट जायेगा निश्चय तेरा, भव-भव में फिर आना जाना।।
चंदन सा.....।

86. कुछ पल की जिन्दगानी

कुछ पल की जिन्दगानी, एक रोज है सबको जाना।
वर्षो की क्यों तूं सोचे, एक पल का नहीं ठिकाना।। टेर।।

मल-मल के तूने अपने, तन को है निखारा,
इत्रों की खुशबुओं से, महके शरीर सारा।
काया न साथ देगी, ये बात मत भूलाना।। 1।।

मन है प्रभु का दर्पण, हर कण में इसे बसाले,
करके तूं कर्म अच्छे, कुछ पुण्य धन कमाले।
कर दान और धर्म तूं, प्रभु को अगर है पाना।। 2।।

आएगी वो घड़ी जब, कोई न साथ देगा,
कर्मो का भी तेरे, जब इक-इक हिसाब होगा।
ये सोच ले अभी से, ये वक्त फिर न आना।। 3।।

कोई नहीं है तेरा, क्यों करता मेरा-मेरा,
खुल जाए नींद जब भी, समझो वहीं सवेरा।
हर भोर के किरण संग, प्रभु का भजन तूं गाना।। 4।।

87. डोली निकाली जाएगी

जब तेरी डोली निकाली जाएगी, बिन मुहूर्त्त के उठाली जाएगी.... ।। टेर ।।

उन हकीमों से यूँ कह दो बोलकर,
करते थे दावा किताबें खोलकर।
यह दवा हर्गिज न खाली जाएगी।। 1 ।।

तन सिकन्दर का यहीं पर रह गया,
मरते दम लुकमान भी यूं कह गया।
ये घड़ी हर्गिज न टाली जाएगी।। 2 ।।

हे मुसाफिर! क्यूँ पसरता है यहाँ,
ये किराये पर मिला तुझको मकान।
कोठरी खाली करा ली जाएगी।। 3 ।।

क्यों गुलों पर हो रही बुलबुल निसार,
है खड़ा पीछे जो माली खबरदार।
मार कर गोली गिरा ली जाएगी।। 4 ।।

चेत ''भैयालाल'' अब जिनवर भजो,
मोह रूपी नींद को जल्दी तजो।
आत्मा परमात्मा बन जाएगी।। 5 ।।

88. इतनी शक्ति हमें देना दाता।

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चले नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।। ध्रुव ।।

दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तूं हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहे हम, जितनी भी दे भली जिंदगी दे।
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना।।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।। 1 ।।

हम न सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।
फूल खुशियों के बांटे सभी को, सबका जीवन ही बन जाये मधुबन।।
अपनी करुणा का जल तूं बहा के, कर दे पावन हर मन को कोना।
हम चले नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।। 2 ।।

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।

89. आखिर तो जाना पड़ता ही है।

कितने दिन का रहवास यहाँ, आखिर तो जाना पड़ता है।
इस बसे बसाये डेरे को, एक रोज उठाना पड़ता है।।

माता मेरी व पिता मेरे, पत्नी मेरी सुत मेरा है।
तज करके सारे संबंधों को, असहाय निकलना पड़ता है।।

जिसको अति पाला पोसा है, जिस पर श्रृंगार सजाया है।
इस प्यारी काया को आखिर, रिश्ता तुड़वाना पड़ता है।।

जो प्यारे दोस्त हमारे हैं, जिनके संग खेले कूदे हैं।
उन दोस्तों को श्मशान बीच, निज हाथ जलाना पड़ता है।।
चाहे धन करोड़ों, अरबों का, चाहे रत्नों का ढ़ेर लगे।
खाली हाथों ही पंछी को आखिर उड़ जाना पड़ता है।।

नश्वर चीजों पर मोहित हो, शाश्वत को गौण किया हमने।
चन्दन शाश्वत को ही शुद्ध मन, आखिर अपनाना पड़ता है।।

90.दौलत के झूठे नशें में हो चूर

दौलत के झूठे नशे में हो चूर, गरीबों की दुनियां से रहते हो दूर,

अजी एक दिन ऐसा आयेगा, जब माटी में सब मिल जायेगा,
माटी ही ओढ़न, माटी बिछावन, माटी में सब मिल जायेगा..।
दौलत के झूठे नशे.....।।टेर।।

ऊँचे आसमान से भी ऊँची तेरी आस है,
पर ये कभी सोचा नहीं, गिनती की तेरी सांस है,
इसका तूं हिसाब कर, अंगूठा अंगुलियों पे धर,
कितना तूं लगा रहा भलाई में,
और कितना तूं लगा रहा बुराई में,
भलाई का फल रह जायेगा, बाकी माटी में सब मिल जायेगा।
दौलत के झूठे नशे.....।।1।।

ऊँची हवेली, ये ऊँचे महल, पल भर में जायेंगे बदल,
ले तूं किसी की दुआँओं का फल,
नेकी में चल और बदी से तू टल,
जैसा बोयेगा, वैसा पायेगा, बाकी माटी में सब मिल जायेगा।
दौलत के झूठे नशे.....।।2।।

91. मिष्टी में मिलेगी मिष्टी, पानी में पानी

(तर्ज: तुम्हीं मेरे मंदिर हो.....)

मिट्टी में मिलेगी मिट्टी, पानी में पानी।
चेत रे गुमानी।
पानी का बुलबुला जैसी, तेरी जिन्दगानी ।।टेर।।

महल खजाने कोठी, काम नहीं आयेंगे।
मरने के बाद तेरे, साथ नहीं जायेंगे।।
माता-पिता, भाई बन्धु, नाना और नानी।
चेत रे गुमानी।।1।।

खाना पीना सोना ये तो, पशुओं का काम है।
दिया नहीं दान तूने, लिया नहीं नाम है।।
यही तो दो बात तूने, दिल में ना मानी।
चेत रे गुमानी ।।2।।

रही ना निशानी यहाँ, शाह और वजीरों की।
एक-एक सांस तेरे, लाख-लाख हीरों की।।
ढाई गज कपड़ा डोली, हो जाये रवानी।
चेत रे गुमानी।।3।।

करले भलाई जग में काम तेरे आयेगी,
मरने के बाद तुझको दुनियाँ सराहेगी,
हमने सुनाई तुमको छोटी-सी कहानी।
चेत रे गुमानी ।।4।।

बुद्धिमान कौन?

अपनी क्षमताओं का सदुपयोग करने वाला अथवा दुरुपयोग करने वाला या अपव्यय करने वाला? दयालु या क्रूर, स्वार्थी अथवा परमार्थी? अहिंसक अथवा हिंसक? अन्य प्राणियों के प्रति मैत्री और प्रेम का आचरण करने वाला या द्वेष और घृणा फेलाने वाला? जीओ और जीने दो के सिद्धान्तों को मानने वाला या दूसरों को स्वार्थ हेतु कष्ट देने वाला, सताने वाला या नष्ट करने वाला? उपरोक्त मापदण्डों के आधार पर ही मनुष्य को सभ्य, सजग, सदाचारी और बुद्धिमान अथवा असभ्य, असजग, दुराचारी और मूर्ख समझा जाता है।

92. हंसा निकल गया काया से

(तर्ज :- सेवो सिद्ध सदा जयकार..... ।)

हंसा निकल गया काया से खाली पड़ी रही तस्वीर ।। टेर ।।
कोई मनावे देवी-देवता, कोई मनावे पीर ।
उस घर का परवाना आया जाना पड़ा आखिर ।।
हंसा निकल गया ।। 1 ।।

कोई नहलावे कोई धुलावे कोई ओढ़ावे चीर ।
चार जणा मिल मतो उठायो, ले गया गंगा तीर ।।
हंसा निकल गया ।। 2 ।।

कोई जीमावे लाडू पेडा, कोई जीमावे खीर ।
कुटूम्ब कबीलो फिर-फिर जीमे, कोई न बंधावे धीर ।।
हंसा निकल गया ।। 3 ।।

जन्म-जन्म तक माता रोवे, बहना वार तिवार ।
भीड़ पड्या पर भाई रोवे, तिरिया तीज त्यौहार ।।
हंसा निकल गया ।। 4 ।।

राजा जावे प्रजा जावे, जावे लोग वजीर ।
पाप-पुण्य संग दोनों जावे, कह गये दास ''कबीर'' ।।
हंसा निकल गया ।। 5 ।।

93. निज बोध हुआ

निज बोध हुआ जब से, शांत हुआ मेरा मन ।
पल-पल में करते हैं, अपने में आत्म दर्शन ।। टेर ।।

कोई क्या कहता है, इसकी परवाह नहीं ।
कोई क्या करता है, उस और निगाह नहीं ।। 1 ।।

अपने पथ का राही, बनकर के चलना है ।
आड़े-टेढ़े पथ पर, हमें न चलना है ।। 2 ।।

मंजिल पर दृष्टि लगी, हुआ बोध दिशाओं का ।
हम पर असर नहीं, क्रोधादि बहावों का ।। 3 ।।

जो कदम बढ़ायेगा, वो आतम-सुख पायेगा ।
कितनी भी हो दूरी, मंजिल वो पायेगा ।। 4 ।।

94. जीवन को बदलना

जीवन को बदलनाऽऽऽ है साधना।
धुएं सा जीवन मौत है, ऽऽ (2) जलना है ऽऽऽ साधना ।।टेर।।

मुंड मुंडाना बहुत सरल है, मन का मुंडन आसान नहीं,
व्यर्थ भभूत रमाना तन पर, यदि जीवन का ज्ञान नहीं।
पर की पीड़ा में मोम-सा, ऽऽऽ पिघलना है, साधना..... ।।1।।

मंदिर में तो बहुत गए, पर मन यह मंदिर नहीं बना,
व्यर्थ शिवालय में जाना, जो मन शिव सुन्दर नहीं बना।
पल-पल समता में इस मन काऽऽऽ ढ़लना है साधना..... ।।2।।

सच्चा पाठ तभी होगा, जब जीवन में पारायण हो,
श्वास-श्वास धड़कन-धड़कन से, आत्मा का प्रक्षालन हो।
तब सत् पथ पर जन-मन का, ऽऽऽ चलना है।साधना..... ।।3।।

95. जब प्राण तन से निकले

इच्छा है मेरी भगवन्, जब प्राण तन से निकले।
मुख से कहूँ मैं अर्हम्, जब प्राण तन से निकले।।टेर।।

होकर नि:शल्य सर्वथा, पंडित मरण मैं मरना।
त्यागूँ मैं पानी भोजन, जब प्राण तन से निकले।।1।।

अनबन अगर किसी से, जीवन में हो गई है।
उससे करूँ क्षमापन, जब प्राण तन से निकले।।2।।

तज मोह माया ममता, मन में बसा के समता।
तेरा करूँ मैं सुमिरण, जब प्राण तन से निकले।।3।।

जय वीतराग जिनवर, जय वीतराग जिनवर।
लग जाए रट यह पल-पल, जब प्राण तन से निकले।।4।।

गुरु जन मेरे निकट हो, मुझको सुनाये वाणी।
बन जाए उच्च जीवन, जब प्राण तन से निकले।।5।।

शांति के साथ एक दम, मेरी लगे समाधि।
बस यही है चाह, 'चन्दन' ,जब प्राण तन से निकले।।6।।

जिन्दगी भर का कमाया, साथ में क्या जायेगा।
इस धरा का इस धरा पर, सब पड़ा रह जायेगा।।
बीतने वाली घड़ी को, कौन लौटा पायेगा।
यह जो सुअवसर खो दिया, तो अंत में पछतायेगा।।

96. मन को दोषी कहते हैं

जो नाच नहीं जाना करते, आंगन को दोषी कहते हैं।
जीवन का अर्थ न समझे जो, जीवन को दोषी कहते हैं।। टेर।।

चंदा में दाग टटोल रहे, चांदनी रात को कोष रहे।
जिनको सुन्दरता नहीं मिली, दर्पण को दोषी कहते हैं।। 1।।

सुनते चंदन लेपन से, कितनो का दर्द मिटा करता।
जो दर्द न मिटाते औरों का, चंदन को दोषी कहते हैं।। 2।।

दिन रात गरजते रहते हैं, बिन मौसम वर्षा करते हैं।
मौसम का जिनको पता नहीं, सावन को दोषी कहते हैं।। 3।।

कांटों की खेती करते हैं, पुष्पों की आशा रखते हैं।
सौरभ का जिनको ज्ञान नहीं, उपवन को दोषी कहते हैं।। 4।।

जो स्वर्ण की भांति तपते हैं, वे ही कुन्दन बन जाते हैं।
तपने से जो भी डरते हैं, कंचन को दोषी कहते हैं।। 5।।

निज सूत्र शास्त्र और आगम का, नहीं गहन मर्म कुछ समझ सके।
श्रद्धा तो मन में जमी नहीं, दर्शन को दोषी कहते हैं।। 6।।

नहीं ध्यान का कुछ अभ्यास किया, नहीं ''सत्य'' साधना कर पाये।
चित्त चंचल इतना विचलित है, हम मन को दोषी कहते हैं।। 7।।

97. जीवन किया निहाल है

संत बनाया जिसने देखो, उसने किया कमाल है।
इस धरती पर स्वर्ग बसाया, जीवन किया निहाल है।।
संत मुनि की बात सुनाऊ-सुनोगे।

लाभ-अलाभ में, सुख-दुःख में, जीवन मरण में समता है।
निन्दा प्रशंसा से नहीं विचलित, आत्मभाव रमणता है।।
कर्म करे बहाल है, जीवन किया निहाल है..... ।। 1।।

संत का दर्शन प्यारा लगता, जीवन खिलता भान है।
हर पन्ना और लाईन देखो, अक्षर-अक्षर ज्ञान है।।
जीवन किया मिसाल है, जीवन किया निहाल है..... ।। 2।।

वीर पुरुष की गति को देखो, आगे बढ़ते जाते हैं।
महावीर की आज्ञा माने, महापुरुष बन जाते हैं।।
समिति युक्त चाल है, जीवन किया निहाल है..... ।।3।।

चलते-फिरते, खाते-पीते, कैसे ये इंसान हैं।
इस धरती पर लगते ये तो संतमुनि भगवान हैं।
गुप्ति इनकी मिसाल है, जीवन किया निहाल है.....।।4।।

जय जयवंत रहे, जिन शासन, खंति मुक्ति धर्म है।
शुभ में रहते ''सुमति'' पाते गुण ग्रहिता मर्म है।।
महाव्रतों की ढ़ाल है, जीवन किया निहाल है.....।।5।।

98. जीवन है धन्य तुम्हारा

पुद्गल की ममता छोड़, मोह को मोड़ किया संथारा,
जीवन है धन्य तुम्हारा।।

दुनिया पुद्गल की प्यासी है, धन परिजन की अभिलाषी है,
जग मोह जाल में फिरता मारा-मारा।।
जीवन है धन्य तुम्हारा।।

जो रात जीम कर सोता है, भूखा वो प्रातः होता है।
यह उदर है या कोई गड्ढा गहरा।।
जीवन है धन्य तुम्हारा।।

तुमसे अनशन की मजबूती, कर खूब दिखाई कर तूती,
अब परिणामों पर सफल खेल है सारा।।
जीवन है धन्य तुम्हारा।।

पल-पल में भूख सतायेगी, ये अपना रंग दिखायेगी,
बन वज्र हृदय देना उसको फटकारा।।
जीवन है धन्य तुम्हारा।।

अपराध खमाओ सारों से, अपने द्वेषी और प्यारों से,
समता में करते रहो स्नान एक धारा।।
जीवन है धन्य तुम्हारा।।

99. मिलता है सच्चा सुख केवल

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल, क्षण-क्षण, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे वैरी सब संसार बने, चाहे मौत गले का हार बने।
चाहे जीवन मुझ पर भार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे कष्टों ने आ घेरा हो, चाहे चारों और अंधेरा हो।
पर चित्त में तेरा डेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

चाहे कांटों पर मुझे चलना हो, चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे।
यह कामना आठों धाम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

100. जरा सुन लो चेतन राजा

(तर्ज:- जरा सामने तो आओ.....।)

जरा सुन लो चेतन राजा, भव-भव रुलने में क्या सार है।
तू बन जा बने तो परमात्मा, तेरी आत्मा में शक्ति अपार है।।टेर।।

पर भाव हेय है, छोड़ चेतन ये, विपत्ति करे और नरक धरे,
ध्यान ही है एक नाव चेतन, जो इधर करे और उधर तारें।
झूठी प्रीति में तेरी हार है, वाणी गणधर की यहीं हितकार है।।1।।

लोभ पाप का बाप चेतन जो, क्यों राग करें और दु:ख भरे,
ज्ञान कसौटी परख चेतन नित, मत छलियों का विश्वास करें।
ठगा जाने की यहाँ भरमार है। इन्हें जीते जो बेड़ा पार है।।2।।

नरतन का स्वभाव चेतन जो, आंख लगी न फिर हाथ लगे,
कर आत्म-रस पान चेतन जो, जन्म गये और मरण गये।
मोक्ष महल का ये ही द्वार है, वीतरागी ही बनना सार है।।3।।

101. कुछ और नहीं भगवान हूँ मैं

देखा जब अपने अन्तर को कुछ और नहीं भगवान हूँ मैं।
पर्याय भले ही पामर हो, अन्तर में वैभववान हूँ मैं।।

चैतन्य प्राणों से जीवित नित, इन्द्रिय बल श्वासोश्वास नहीं।
हूँ आयु रहित शिव अजर-अमर, सच्चिदानंद गुणखान हूँ मैं।।1।।

आधीन नहीं संयोगों के, पर्यायों से अप्रभावी हूँ।
स्वाधीन अखंड़ प्रतापी हूँ, निज से ही प्रभुतावान हूँ मैं।।2।।

सामान्य विशेषों सहित विश्व, प्रत्यक्ष झलक जावें क्षण में।
सर्वज्ञ सर्वदर्शी आदिक, सम्यक् निधियों की खान हूँ मैं।।3।।

सवधर्मों में व्याप्ती विभु हूँ और धर्म अनतामय धर्मी।
निज निज स्वरूप की रचना से, अन्तर में धीरज वान हूँ मैं।।4।।

मेरा वैभव शाश्वत अक्षुण्य, पर से आदान-प्रदान नहीं।
त्यागोपादान शून्य निष्क्रिय अरू, अगुरू लघु गुणधाम हूँ मैं।।5।।

तृप्ति आनन्दमय प्रगटी जब देखा अन्तर नाथ हूँ मैं।
नहीं रही कामना अब कोई, बस निर्विकारों निष्काम हूँ मैं।।6।।

102. समझों चेतन जी अपना रुप

समझो चेतन जी अपना रूप, यों अवसर मत हारो-2
ज्ञान दरस मय रूप तिहारों, अस्थि, मांसमय, देह न धारो।
दूर करो अज्ञान, होवे घट उजियालो।।1।।

पोपट ज्यूं पिंजर बंधायों, मोह कर्मवश स्वांग बनायो।
रूप धरें है अनपार, अब तो करो किनारो।।2।।

तन-धन के नहीं तुम हो स्वामी, ये सब पुद्गल पिंड है नामी।
सत् चित्त गुण भंडार, तू जग देखन हारो।।3।।

भटकत-भटकत नर तन पायो, पुण्य उदय सब योग सवायो।
ज्ञान की ज्योति जगाय, भ्रम तम दूर निवारों ।।4।।

पुण्य पाप का तू है कर्त्ता, सुख-दुःख फल का भी तू है भोक्ता।
तू ही छेदन हार, ज्ञान से तत्त्व विचारों।।5।।
कर्म काटकर मुक्ति मिलावें, चेतन निज पद को तब पावें।
मुक्ति के मार्ग चार, जानकर दिल में धारो।।6।।

सागर में जलधार समावें, यूं शिवपद में ज्योति मिलावें।
होवे ''गज'' उद्धार, अचल है निज अधिकारो।।7।।

103. जरा धर्म की गठरी बांधों।

(तर्ज :- जरा सामने तो आओ .....।)

जरा धर्म की गठरी बांधो, मौत मस्तक पर हो रही संवार है,
आता-आता ही श्वास रूक जायेंगा, इसका कुछ भी न एतबार है।

आने के बाद मौत कुछ भी न होगा, यों ही तड़फ मर जाओगे।
मन की मुरादें मन में रहेंगी, पूरी न करने पाओगे।
बांधों पानी से पहले पाल है, सुखी बनने का यहीं बस ख्याल है।।1।।

कल पर धर्म को बिल्कुल न छोड़ो, कल पता क्या हो जायेंगा।
राज्य के बदले में वनवास हो गया, रघुवीर भी समझ नहीं पाये थे।
औरों का फिर क्या सवाल है, प्रभु भक्ति ही जग में सार है।।2।।

जीवन की जो पल है बीत जाती, वापिस फिर न वह आ सकती।
आती को पकड़ों, जाने लगेगी, फिर तो न पकड़ी जायेगी।
धर्म करने का अवसर उद्धार है, प्यारे प्रभु जी ही तारण हार है।।3।।

माता के तुल्य पर-नारी को समझों, मिट्टी सा समझों तुम परधन को।
आत्मा के तुल्य सब जीवों को समझों, शिक्षा सुनाता है मुनि धन्ना।
ज्ञान सुनने का फिर यहीं सार है, कुछ ले ले तो बेड़ा पार है।।4।।

104. ऐसा हो संकल्प हमारा।

(तर्ज :- जिह्वा पर हो नाम.....।)

ऐसा हो संकल्प हमारा जन्म-मरण से मुक्ति हो।
रहे सदा निर्लिप्त जगत में, नहीं किंचित आसक्ति हो।।

जन्म-जन्म से तन-मन साधा, बनकर रहें विकारी हम,
अब चेतन के बने पुजारी, जड़ के नहीं पुजारी हम।
अविनाशी सुख पाने को अब, जग से सदा विरक्ति हो।।
रहे सदा.....।।1।।

रोम-रोम, नस-नस में, प्रभु की वाणी का विश्वास रहें,
बने आराधक इस भव में हम, एक ही अपना कार्य रहें।
ग्रन्थी तोड़े राग-द्वेष की, ऐसी आत्मशक्ति हो।।
रहे सदा.....।।2।।

कथनी करनी एक रूप हो, सरल स्वच्छ व्यवहार रहें।
जीवन हो प्रमाणिक अपना, छल छद्मों से दूर रहें।
सत्य धर्म हो, सत्य कर्म हो, सत्य की ही अभिव्यक्ति हो।।
रहे सदा.....।।3।।

धन वैभव सत्ता का मालिक, श्रेणिक ने खुद को समझा।
मुनि अनाथी से भ्रम टूटा, अन्तर में समकित उपजा।
नाथ-अनाथ का पाठ पढ़े, अब टूटे भ्रम वो युक्ति हो।।
रहे सदा.....।।4।।

अब तक तो भव-भव में भटके, अब नहीं हमें भटकना है।
जन्म जरा और रोग मरण का अब नहीं दुख उठाना है।
गौतम से प्रभु फरमाते है, संयम में अनुरक्ति हो।।
रहे सदा.....।।5।।

निर्दोषों का रक्त बहाना, मानवता का मान नहीं।
हिन्दू, मुस्लिम याद तुम्हें, क्या गीता और कुरान नहीं।।

105. मीठो-मीठो बोल थारों कांई लागे

मीठो-मीठो बोल थारों कांई लागे, काई लोगे जी थारों कांई लागे।
संसार किसी का घर नहीं, कब निकले प्राण खबर नहीं, मीठो.....।

चार दिना रो जीणो है संसार, थांरी मारी छोड़ करां सब प्यार।
हिलमिल रैवो, हंसखिल जीवो-2, संसार कोई रो घर नहीं।।1।।

अवगुण छोड़ो, गुण री कर लो बात, जीवन में आनन्द री बरसात।
मिठास रो, अहसास लो-2, संसार कोई रो घर नहीं।।2।।

जिस घर में सब हिल-मिल ने रेवे, उस घर प्रभु जी मोत्यां बरसावें।
सब प्रेम रो प्यालो पीवो-2, संसार कोई रो घर नहीं।।3।।

माता-पिता ने जाणो थे भगवान, उणरी सेवा है, प्रभु रो सम्मान।
सेवा करो, आशीष लो-2, संसार कोई रो घर नहीं।।4।।

106. गुरु ने राह दिखाई

गुरु ने राह दिखाई, अभी चलना है बाकी।
राही तुम भूल न जाना-2, अभी मंजिल है बाकी।

मधुर व्यवहार हो अपना, मधुरता हो वचन में।
टूटे ना दिल किसी का, बसे वो प्रेम मन में।
क्षमा का पाठ पढ़ा है-2, अभी सहना है बाकी।।1।।

नहीं दें दोष किसी को, यदि विपदा भी आयें।
किये जो कर्म मैंने, उदय वो आज आए।
खेल कर्मों का समझें, अभी बचना है बाकी।।2।।

जन्म-जन्मों से भटकें, आत्म हित को न समझें।
मार्ग सच्चा भुलाकर, राही पर मैं ही उलझा।
आज सद्बोध मिला है, सफल होना है बाकी।।3।।

जहाँ न जन्म-मृत्यु, जहाँ ना कर्म बंधन।
चलो उस पार चेतन, जहाँ ना कर्म बंधन।
प्रभु गौतम से कहते, अभी तिरना है बाकी।।4।।

भाग्यवान वह है, जिसका धन गुलाम है।
अभागा वह है, जो धन का गुलाम है।।

107. मैं नहीं मेरा नहीं

मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वह धन किसी का है दिया।।

देने वाले ने दिया, वह भी दिया किस शान से।
'मेरा है' यह लेने वाला कह उठा अभिमान से।
मैं मेरा यह कहने वाला, मन किसी का है दिया।
मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।। 1 ।।

जो मिला है वह हमेशा, पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जायें यह कोई राज कह सकता नहीं।
जिंदगानी का खिला मधुबन किसी का है दिया।
मैं नहीं, मेरा नहीं यह तन किसी का है दिया।। 2 ।।

जग की सेवा खोज अपनी प्रीति उनसे कीजिये।
जिंदगी का राज है, यह जानकर जी लीजिये।
साधना की राह पर, साधन किसी का है दिया।
मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।।3 ।।

108. जिस गीत में गुण और ज्ञान न हो

जिस गीत में गुण और ज्ञान न हो, उस गीत को गाना ना चाहिए।
जिस मन में भक्ति भाव न हो, उसे भावना में आना ना चाहिए।।
जिस गीत में गुण..... ।

जिस माता ने तुझको जन्म दिया, उसे मां को सताना ना चाहिए।
जिसने पाल-पोष के बड़ा किया, उस पिता को सताना ना चाहिए।।
जिस गीत में गुण..... ।

चाहे बेटा कितना भी प्यारा हो, उस सिर पे चढ़ाना ना चाहिए।
चाहे बेटी कितनी भी प्यारी हो, घर-घर में घुमाना ना चाहिए।।
जिस गीत में गुण..... ।
चाहे पत्नी कितनी भी प्यारी हो, उसे भेद बताना ना चाहिये।
चाहे भाई कितना भी दुश्मन हो, उससे राज छुपाना ना चाहिए।।
जिस गीत में गुण..... ।

चाहे कितनी भी गरीबी हो, उसे लाचारी बताना ना चाहिये।
चाहे कितनी भी अमीरी हो, उसे गर्व से बताना ना चाहिये।।
जिस गीत में गुण..... ।

109. बड़े प्यार से मिलना सबसे

बड़े प्यार से मिलना सबसे, दुनियां में इन्सान रे।
क्या जाने किस भेष में बाबा, मिल जाए भगवान रे।।
बड़े प्यार से मिलना सबसे.....।। टेर।।

कौन बड़ा है, कौन है छोटा, कौन है ऊँचा और कौन है नीचा।
प्रेम के जल से सबको सींचा, यह है प्रभु का बगीचा।
मत खींचो दीवारें तुम इन्सानों के दरम्यान रे।
बड़े प्यार से मिलना सबसे.....।। 1।।

ओ महन्त जी ओ महन्त जी,
तुम खोज रहे प्रभु को मोती की लड़ियों में।
कभी उन्हें ढूंढा है, क्या भूखों की अन्तड़ियों में?
दीनजनों के असुवन से क्या कभी किया स्नान रे।
बड़े प्यार से मिलना सबसे.....।। 2।।

क्या जाने कब श्याम मुरारी आ जाये बनके भिखारी,
लौट न जाये खाली द्वार से, लिये बिना कुछ दान रे।। 3।।
बड़े प्यार से मिलना सबसे.....।। 3।।

110. मेरा प्रणाम लेना

(तर्ज : वो दिल कहाँ से लाऊँ)

मेरा प्रणाम लेना, अर्हम् कहाने वाले।
चारित्र लक्ष्मी देना, मुक्ति में जाने वाले।। टेर।।

संसार के प्रकाशक, भव दुःख के विनाशक।
अपनी शरण में लेना, भय को भगाने वाले।। 1।।

हो धर्म के प्रदाता, शिव मार्ग के विधाता।
तुम बिन विजय मिले ना, रथ को चलाने वाले।। 2।।

गहरा अन्धेरा छाया, ढूँढा न मार्ग पाया।
सन्मार्ग हमको देना, रास्ता दिखाने वाले।। 3।।

भव पाश में फँसे हैं, सब ओर से कसे हैं।
विभ्रान्त हैं छुड़ाना, बन्धन छुड़ाने वाले।। 4।।

माया की मन्त्रणा में, जीते कुयन्त्रणा में।
नैया हमारी खैना, नैया तिराने वाले।। 5।।

संसार का सताया, चरणों में तेरे आया।
कहीं और कुछ बनेगा, बिगड़ी बनाने वाले।। 6।।

111. नर जाग गया फिर सोना क्या

नर जाग गया फिर सोना क्या-2 ।।टेर।।

पाया है तो दे दे प्यारे, पाय-पाय फिर खोना क्या।
नर जाग गया..... ।।1।।

जिन अखियन में नींद घनेरी तकिया और बिछौना क्या।
नर जाग गया..... ।।2।।

लूखा-सूखा गम का टुकड़ा फीका और सलोना क्या।
नर जाग गया..... ।।3।।

कहत कबीर सुना भाई साधो शीष दिया फिर रोना क्या।
नर जाग गया..... ।।4।।

112. किसी के काम जो आए

किसी के काम जो आए उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द जो अपनाए उसे इन्सान कहते हैं।।
कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
जो मुश्किलों से न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं।।1।।

यह दुनियाँ एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रो कर।
जो गिरकर संभल जाये, उसे इन्सान कहते हैं।।2।।

कभी सद्गुण हंसाते हैं, कभी भूलें रुलाती है।
भला है भूल न होना, कभी वह हो भी जाती है।
जो करले ठीक गल्ती को, उसे इन्सान कहते हैं।।3।।

यों भरने को तो दुनियाँ में पशु भी पेट भरते हैं।
लिये इन्सान का दिल, वह परमार्थ करते हैं
स्वयं जो बांटकर खाये, उसे इन्सान कहते हैं।।4।।

113. बोल सको तो मीठा बोलो

बोल सको तो मीठा बोलो, कटु बोलना मत सीखो।
बचा सको तो जीव बचाओ, जीव मारना मत सीखो।।

बदल सको तो पथ बदलो, पथ भटकना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाओ, हृदय जलाना मत सीखो।।

बिछा सको तो फूल बिछाओ, शूल बिछाना मत सिखो।
मिटा सको तो अहंकार मिटाना, प्यार मिटाना मत सिखो।।

कमा सको तो पुण्य कमाना, पाप कमाना मत सिखो।
लगा सको तो बाग लगाना, आग लगाना मत सीखो।।

दे सको तो जीवन दे दो, जीवन लेना मत सीखो।
बोल सको तो सच बोलो, झूठ बोलना मत सीखो।।

114. नाम प्रभु का लिया करो

नाम प्रभु का लिया करो, दुःख न किसी को दिया करो।
दीन-दुःखी जो दर पर आये, सेवा उसकी किया करो।।
दुःख न किसी को दिया करो।। टेर।।

इस दुनियां में जितने प्राणी, सभी बराबर सारे है।
जैसे तुम को प्राण है प्यारे, वैसे सबको प्यारे है।
इसलिये महावीर कह गये, जीने दो और जिया करो।
दुःख न किसी को दिया करो।। 1।।

क्यों आये हो इस धरती पर, क्या कुछ कभी विचार किया।
मोह माया के फंदें में फंस, नहीं प्रभु से प्यार किया।।
अन्त समय पछताओगे तुम, काम बुरे मत किया करो।
दुःख न किसी को दिया करो।। 2।।

धन-दौलत की खातिर तुमने, कितने पाप कमाये।
नहीं तुम्हारे साथ चलेंगे, जो यह महल चुनाये है।
एक धर्म ही साथ चलेगा, धर्म का प्याला पिया करो।।
दुःख न किसी को दिया करो।। 3।।

कभी नहीं सोचा यह मन में, क्या खोया क्या पाया ?
मुश्किल से यह नर तन पाया, लेकिन व्यर्थ गंवाया।।
'पारस' जरा से इस जीवन में, नहीं बुराई किया करो।
दुःख न किसी को दिया करो।। 4।।

115. उठ-उठ रे म्हारा ज्ञानी रहे जीवड़ा

(तर्ज : उड़ उड़ रे म्हारा काला कागला)
उठ उठ रे म्हारा ज्ञानी रे जीवड़ा,
दो घड़ी प्रभु रो भजन करो।। टेर।।

प्रभु भजनां सूं ज्ञान मिले है,
प्रभु सम तूं बणजा रे जीवड़ा।। 1।।

प्रभु भजना सूं मैल धूपे है,
करमां रो कोड़ कटे रे जीवड़ा।।2।।

प्रभु भजना सूं शांति मिले है,
प्रभु सूं तार जुड़े रे जीवड़ा।।3।।

प्रभु भजना सूं द्वेष मिटे हैं,
राग रो रंग हटे रे जीवड़ा।।4।।

प्रभु भजना सूं दोष टले है,
पद अरिहंत मिले रे जीवड़ा।।5।।

प्रभु भजना सूं दारिद्र जावे,
सुख-संपत पावे रे जीवड़ा।।6।।

116. जरा जाग प्राणी रे

(तर्ज:- छुप गया कोई रे.....।)

जरा जाग प्राणी रे, अखियां उघार रे,
सफल बनाले जीवन, जीना दिन चार रे।।टेर।।

पल-पल बीते उमर सिर पे है काल रे,
नींद में क्यों सोया पहले, होश तो संभाल रे,
अनमोल घड़िया तेरी, जाये ना बेकार रे।।1।।
सफल बनाले.....।

सवेरे ही बगिया में, खिला एक फूल रे,
आया हवा का झोंका मिल गया धूल रे,
स्थिर नहीं काया-माया, निज को निहार रे।।2।।
सफल बनाले.....।

धन का खजाना तेरे, चले नहीं साथ रे,
खाली हाथ आया जग में जाना खाली हाथ रे,
काहे का गुमान तेरा, जरा तो विचार रे।।3।।
सफल बनाले.....।

सपने की माया सारी, दिन दो का खेल रे,
झूठे हैं रिश्ते-नाते स्वार्थ का मेल रे,
क्यों तूं लुभाया पगले, झूठा जग प्यारे रे।।4।।
सफल बनाले.....।

हो जा सचेत अब तो, कहना तू मान रे,
प्रभु भक्ति करके पा ले, मुक्ति का सोपान रे,
वक्त जो जाये 'गौतम' व्यर्थ न बेकार रे।।5।।
सफल बनाले.....।

117. दयामय ऐसी मति हो जाय

दयामय ऐसी मति हो जाय, दयामय ऐसी मति हो जाय।
त्रिभुवन की कल्याण कामना, दिन-दिन बढ़ती जाय।।1।।

भूले-भटके उल्टी मति के, जो है जन समुदाय।
उन्हें दिखाऊँ सच्चा सत्पथ, निज सर्वस्व लगाय।।2।।

औरों के दुःख को दुःख समझूँ, सुख का करूँ उपाय।
अपने सब दुःख सहूं किन्तु, पर दुःख सहा न जाय।।3।।

सत्य धर्म हो, सत्य कर्म हो, सत्य ध्येय बन जाय।
सत्यान्वेषण में ही जीवन, प्रेमी यह लग जाय।।4।।

118. मां का आशीर्वाद

नव मास पाला गर्भ में, तेरे जन्म की पीड़ा सही।
अमृत पिलाकर दूध का, जीवन तुझे देती रही।
तेरी आंख के हर आंसू पर, वो अपनी जान देती रही,
ऐसी दयालु मात के चरणों करो नित वन्दना।।1।।

मां ज्ञान है, संस्कार है, मां के चरण में तीर्थ है,
मां स्वर्ग है, जनन्त है मां, मां ही प्रभु का रूप है
माता समान नहीं कोई, मां जग में सकल स्वरूप है।।2।।

मां धर्म है, मां प्रेम है, मां में सकल संसार है,
मां के वचन को मान लो, तो ही सफल अवतार है,
मां की करो भक्ति सदा वो ही तेरा किरदार है।।3।।

मां के हृदय को दुःख दे, उसका जीवन धिक्कार है,
मां की करे सेवा नहीं, वो बेटा ही बेकार है,
आंसू न देना आंख में, दिल से न देना क्रन्दना।।4।।

मां शब्द में जो प्रेम है वो प्रेम जग में मिला नहीं
जिस घर में मां हंसती नहीं, उस घर में फूल खिले नहीं
संतान को यह सीख है, मां को सदा हंसती रखो।।5।।

मां के नयन से बरसती, अद्भुत अमृत धार है,
अमृत ये जिसने पी लिया, जीवन उसी ने संवारा है,
पीते रहो उस धार को, यह जीवन अमृतमय बनें।।6।।

मां के हृदय की जोड़ इस जग में तो कोई मिले नहीं,
सागर अथाह है यह स्नेह का कोई खोट जिसमें है नहीं,
स्नेहमय उस हृदय को तुम ठेस कभी देना नहीं।।7।।

मां के दयालु हाथ को, सागर दया का जानना,
वो हाथ जिस सिर पर फिरे उसे भाग्यशाली मानना,
ममतामयी इस रूप में है जीवन अपना संवारना।।8।।

जो प्रातः उठकर मां के चरण नित्य करें वन्दना,
उसको कभी मिलती नहीं जग में कोई भी क्रन्दना,
है शास्त्र ने माना उसे, संतों ने जिसकी पूजा की।।9।।

मधुलिप्त मीठी वाणी से, मां तो सदा है बोलती,
उसके मधुर वचनों पे, दुनिया ये सारी डोलत,
इन वचनों का आदर करें, वो प्रभु पावे सर्वदा।।10।।

सबसे बड़ी है मां जगत में, बात यह भूलों नहीं,
उपकार मां के अनगिनत है उससे मुंह फेरों नहीं,
सेवा करो मां की सदा आशीष पाओ सर्वदा।।11।।

119. माता की दया हम पर

माता की दया हम पर हर दम ही बनी रहती।
संतान के सारे गम, मां खुद में समा लेती।।

मां से बढ़ कर जग में, कोई चीज नहीं होती।
मां जैसी दुनियां में कोई और नहीं होती।।

सारे दुःख सहकर भी, वो खुशियाँ हमें देती।
संतान के सारे गम मां खुद में समा लेती।।

चाहे पूत कपूत बने, पर मां तो मां ही है।
माता की क्षमा का तो, कोई पार न पाया है।।

वो स्नेह आंसू को, आंचल में छुपा लेती।
संतान के सारे गम, मां खुद में समा लेती।।

वो प्रेम का सागर है, ममता की देवी है।
हम सबकी शक्ति है, हम जग की जननी है।।

भगवान से भी पहले, मां की पूजा होती।
संतान के सारे गम, मां खुद में समा लेती।।

मां तेरे चरणों में, बीते हैं राह हर पल।
मां तेरे आशीष की, छाया भी हम पर।।

जग की इस ज्वाला को, मां तू ही बुझा सकती है।
संतान के सारे गम, मां खुद में समा लेती।।

जब-जब संकट आया, संतान पर मां तेरे।
लहु अपना बहाया है, बेटों की रक्षा में।
मां सब कुछ भूलकर भी, हमको बचा लेती।।

संसार छलावे में, मां तू ही निश्चल है।
हमें छोड़ के मत जाना, मां तेरा सहारा है।।

सब कुछ मिल जाता है, पर मां तो नहीं मिलती।
संतान के सारे गम, मां खुद में समा लेती।।

120. हर बात को तुम भूलों मगर.....।

हर बात को तुम भूलो भले, मां-बाप को मत भूलना।
उपकार उनके लाखों है, इस बात को मत भूलना।।
हर बात को तुम.....।

हर पत्थर को है पूजा, भगवान को लाख मनाया है।
तब तेरी सूरत पाई है, संसार में तुझको बुलाया है।
इन पावन लोगों के दिल को, पत्थर बन कर मत तोड़ना।
हर बात को तुम.....।

अपने ही पेट को काटा है और तेरी काया सजाई है।
अपना हर कौर खिलाया तुझे, तब तेरी भूख मिटायी है।।
इन अमृत देने वालो के जीवन तकें जहर मत घोलना।
हर बात को तुम.....।

चाहे लाख कमाये धन दौलत, यह बंगला कोठी बनायी है।
मां-बाप ही ना खुश हो तेरे, बेकार यह सारी कमाई है।।
यह लाख नहीं यह राख है इस बात को मत भूलना।।
हर बात को तुम.....।

गीले में सदा ही सोये हैं, सुखे में तुझे सुलाया है।
बांहों का बनाकर के झूला, तुझे दिन और रात झुलाया है।।
इन निर्मल निश्चल आंखों में, एक आंसू भी मत घोलना ।।
हर बात को तुम.....।

जो चीज भी तूने मांगी है, वो सब कुछ तूने पाया है।
हर जिद को लगाया सीने में, वहां तुझसे नेह लगाया है।।
इन प्यार लूटाने वालों का, तू प्रेम प्यार मत भूलना।।
हर बात को तुम.....।

121. कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं

(तर्ज:- तुम अगर साथ देने का .....।)

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं, बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं, बाद आँसु बहाने से क्या फायदा।।

मैं मंदिर गया पूजा आरती की, पूजा करते हुए ये खयाल आ गया।
कभी माता-पिता की सेवा की ही नहीं, सिर्फ पूजा ही करने से क्या फायदा।।

मैं स्थानक गया, गुरुवाणी सुनी, गुरुवाणी को सुनकर खयाल आ गया।
जैन कुल में जन्मा, जैनी बन ना सका, सिर्फ जैनी कहलाने से क्या फायदा।।

मैं काशी,बनारस, मथुरा गया, गंगा नहाते हुए ये खयाल आ गया।
तन को धोया मगर मन को धोया नहीं, सिर्फ गंगा नहाने से क्या फायदा।।

मैंने दान दिया, मैंने जप-तप किया, दान करते हुए ये खयाल आ गया।
कभी भूखे को भोजन कराया नहीं, दान लाखों का कर दूँ तो क्या फायदा।।

122. जो माँ की ना सुनेगा

(तर्ज :-गरीबों की सुनो, वो तुम्हारी सुनेगा।)

जो माँ की ना सुनेगा, तेरी कौन सुनेगा,
जो माँ को ठुकरायेगा, दर-दर की ठोकरे खायेगा।
जो माता को प्यार करें, वो लोग निराले होते हैं।
जिसे माँ का आशीर्वाद मिले, वो किस्मत वाले होते हैं।
चाहे लाख करो तुम पूजा, और तीरथ करो हजार,
मगर माँ-बाप को ठुकराया तो, ये सब कुछ है बेकार।
जो माँ की ना सुनेगा.....।।टेर।।

जिस माता ने जन्म दिया है, उस माता को भूल गया,
जिस माता ने बड़ा किया है, उस माता से रूठ गया।
तकलीफ कितनी उसने सही थी, नौं महिने गर्भ में लेकर फीरी थी,
फिर भी तू उसको भूल गया है, अपनी ही माँ से रूठ गया है।
याद करो उस बचपन को, तू कैसे भूल पायेगा।
जो माँ की ना सुनेगा.....।।1।।

बचपन में तो पहला अक्षर तूने माँ ही बोला था,
तब ही तेरी माँ का मन, एक मोरनी बनकर डोला था,
तेरे पीछे वो तो पागल बनी थी, ममता की छांव का बादल बनी थी
ऐसी ही माता को भूल ना जाना, ममता का कर्जा जल्दी चुकाना-2
स्वर्ग है माँ के चरणों में, जो समझेगा वो पायेगा,
जो माँ की ना सुनेगा.....।।2।।

चाहे लाखों कमालो, चाहे करोड़ों भी कमा लेना,
जिसने माता को नहीं जीता, धिक्कार है उसका जीना,
गर्व ना कर तू धन का ओ पगले, गाड़ी ये बंगले यहीं तो रहेंगे,
माता-पिता की ले ले दुआये, जीवन बनेगा तेरा सुखदाई-2,
जिसने नहीं ली माँ की दुआयें, हरदम वो पछतायेगा,
जो माँ की ना सुनेगा.....।।3।।

बेटे की शादी होते ही, माँ को भूल जाता है,
घरवाली की बाते सुनकर, माँ से अलग हो जाता है।
बहु सास को जब परेशान करेगी, एक दिन बहु भी तो सास बनेगी,
जहर को घोला तो जहर ही मिलेगा, कांटो को बोया तो कांटे मिलेंगे-2
दुनियां में सब कुछ मिलेगा, पर मां नहीं मिल पायेगी।
जो माँ की ना सुनेगा.....।।4।।

मात-पिता की तबियत बिगड़ी, बेटे को तो समय नहीं
धंधापानी छोड़ के माता को, मिलने में धर्म नहीं।
सास-ससूर की तबियत बिगड़ी, टिकट निकाली हवाई जहाज की,
शर्म करो ओ माँ के सपूतों, अब भी समय है पहचानो माँ को-2
मात-पिता को छोड़ चला, ससुराल से तू क्या पायेंगा,
जो माँ की ना सुनेगा.....।।5।।

चाहे पूजा पाठ करो और प्रवचन सुनलो तुम भाई
चाहे कितना धर्म करो, जो माँ की ममता ना पाई,
चाहे बड़ी तुम तपस्या भी कर लो, चाहे लाखों का दान भी करलो,
चाहे चले जाओ नहाने गंगा, चाहे चले जाओ कोई तीर्थ में-2
जिसने नहीं जीता माता को, प्रभुवर को क्या जितेगा।
जो माँ की ना सुनेगा.....।।6।।

बुढ़ापे में मात-पिता का सपना जब टूट जाता है,
दौलत के संग मात-पिता का बंटवारा हो जाता है
एक बेटा अपने घर माँ को ले जाये,

एक बेटा अपने घर बाप को ले जाये,
एक होते भी हो गये पराये, दोनों बिछड़कर आंसू बहाये-2
उनके दिल को ठेस लगाकर, जो बबूल को बोयेगा,
वो आम कहा से खायेगा।
जो माँ की ना सुनेगा..... ।। 7 ।।

एक पिता अपने बेटे को भेंट में गाड़ी देता है।
वो ही बेटा मात-पिता को थाली तक नहीं देता है
फिर भी वो माँ खफा नहीं होती,
जुबां से कभी बद्दुआ नहीं देती।
माँ तो तेरी ममता की ज्योति, माँ के आंसु है सच्चे मोती-2
मात-पिता की हाय लगी वो, उनके दिल को ठेस लगा के,
आग बुझा नहीं पायेंगा, बेटा संभल न पायेगा।
जो माँ की ना सुनेगा..... ।। 8 ।।

इस दुनिया को माँ की महिमा सबको आज सुनानी है
माँ और बेटे के रिश्ते की ये तो अमर कहानी है
माता ने बेटे को जन्म दिया है, बाप ने बेटे को सब कुछ दिया है,
तूने उसका क्या बदला दिया है, किसके भरोसे छोड़ दिया है-2
माता-पिता को दु:ख दे के भी, कहां से तू सुख पायेगा,
जो माँ की ना सुनेगा..... ।। 9 ।।

माँ के गीत गाकर ही आंख में आंसू आते हैं,
मां से बिछुड़ने वाले बेटे को हम बार-बार समझाते हैं।
माता तो ममता की देवी कहाये, भूखी रहे सबको खिलाये।
नफरत कभी भी दिल में न लाये, रूठे हुए को गले से लगाये।
मां की आशीष जो पायेंगा, सीधा स्वर्ग में जायेंगा।
जो माँ की ना सुनेगा..... ।। 10 ।।

एकेन्द्रिय जीवों की विराधना से भविष्य में स्पर्शेन्द्रिय, काय बल प्राण, आयुष्य एवं श्वासोच्छ्वास बल प्राण कमजोर मिलेंगे। शरीर साथ नहीं देता, सहन शक्ति कमजोर होती है। एकेन्द्रिय जीव की द्रव्य विराधना से पूर्णत: बचना तो कठिन है, परन्तु यतनापूर्वक जीवन जीने से उसमें कमी तो आ ही सकती है। भाव प्राणों की विराधना, द्रव्य प्राणों की विराधना से भी ज्यादा खतरनाक होती है। अत: कम से कम हम भाव प्राणों की विराधना से तो बचने का सम्यक् पुरुषार्थ अवश्य करें।

गौ माता की करुण पुकार

(तर्ज :- ऐ मेरे वतन के लोगो... ।)

हे हिन्द देश के लोगों, मेरी सुन लो करुण कहानी ।
क्यों दया धर्म ठुकराया, क्यों दुनिया हुई दिवानी ।।
जय हिन्द..... ।। टेर ।।

मैं सबको दूध पिलाती, मैं गउमाता कहलाती ।
क्या है अपराध हमारा, जो काटे आज कसाई ।।
बस भीख प्राण की दे दो, मैं द्वार तुम्हारे आई ।
मैं सबसे निर्मल प्राणी, मत करो आप मनमानी ।। 1 ।।

जब जाऊँ कसाई खाने, भूख से मैं तड़फाती ।
उस उबले जल को तन पर, मैं सहन नहीं कर पाती ।।
जब यंत्र मौत का आता, मैं हाय-हाय चिल्लाती ।
मेरा साथ न कोई देता, यह सबकी प्रीत पहचानी ।। 2 ।।

उस समदर्शी ईश्वर ने, क्यूं हमको पशु बनाया ।
न हाथ लड़ने को हैं, हिन्द भी हुआ पराया ।
अब कोई मोहन बन जाओ रे, जो मुझको कंठ लगाये ।
मैं फर्ज निभाऊँ माँ का, पर जग ने प्रीत न जानी ।। 3 ।।

मैं माँ बन दूध पिलाती, तुम माँ का मांस भी खाते ।
क्यों जननी के चमड़े से, तुम पैसे आज कमाते ।।
मेरे बछड़े अन्न उपजाते, पर तुम सब दया न लाते ।
गौ हत्या बंद करो रे, रहने दो वंश निशानी ।। 4 ।।

ऐ हिन्द देश के लोगों, मेरी सुन लो करुण कहानी ।
क्यों दया धर्म ठुकराया, क्यों दुनिया हुई दिवानी ।।

-: चोरडिया प्रकाशन की पुस्तकें :-

(लेखक - डॉ. चंचलमल चोरडिया)

क्र.स.	विवरण	सहयोग राशि
1.	आरोग्य आपका।	260 रु.
2.	स्वस्थ रहें या रोगी फैसला आपका ?	40 रु.
3.	शरीर स्वयं का चिकित्सक	15 रु.
4.	मौलिक चिकित्सा कौनसी	20 रु.
5.	भोजन और स्वास्थ्य	20 रु.
6.	क्या हम स्वस्थ रहना चाहते हैं ?	10 रु.
7.	आपका उपचार आपके पास	10 रु.
8.	पीने योग्य शक्तिवर्धक पानी	10 रु.
9.	प्रभावशाली स्वावलम्बी लीवर शुद्धिकरण चिकित्सा	10 रु.
10.	स्वास्थ्य का अमूल्य खजाना : मानव मूत्र	20 रु.
11.	UROPATHY	15 रु.
12.	Resetting of Disturbed LEG, SPINE & NAVEL	21 रु.
13.	आपका आरोग्य आपके पास	25 रु.
14.	प्रभावशाली अहिंसक चिकित्सा पद्धतियाँ (प्रथम संस्करण)	40 रु.
15.	सुखी जीवन का मूलाधार अहिंसक जीवन शैली	15 रु.
16.	प्रभावशाली उपचार हेतु सही निदान आवश्यक	10 रु.
17.	नाड़ी तंत्र एवं मांसपेशियों का उपचार।	15 रु.
18.	बिना दवा मधुमेह (डायबिटीज) का प्रभावशाली उपचार	20 रु.
19.	मांसाहार कितना उचित ?	10 रु.
20.	स्वास्थ्य हेतु सम्यक् चिन्तन आवश्यक।	10 रु.
21.	सजगता ही स्वास्थ्य है।	10 रु.
22.	प्रभावशाली स्वावलंबी उपचार।	10 रु.
23.	स्वास्थ्य का दर्पण आरोग्य आपका	15 रु.
24.	निर्दोष, स्वास्थ्यवर्धक जीवन शैली	11 रु.
25.	क्या बुद्धिमान व्यक्ति मांसाहारी हो सकता है ?	10 रु.
26.	निर्दोष श्रमणोपचार	15 रु.
27.	हम कितने अहिंसक ?	10 रु.
28.	भोजन हेतु पशु हिंसा अनुचित	10 रु.
29.	स्वास्थ्य मंत्रालय स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धतियों के प्रति कितना सजग ?	20 रु.
30.	प्रभावशाली अहिंसक चिकित्सा पद्धतियाँ (संशोधित संस्करण)	45 रु.
31.	जीवन है अनमोल।(भजन संकलन)	20 रु.
	(लेखिका - श्रीमती रतन चोरडिया)	
32.	आत्म-वैभव	25 रु.
33.	आपका उपचार आपके घर।	25 रु.
34.	मृत्यु एक महोत्सव।	15 रु.
35.	दो कदम लक्ष्य की ओर।	11 रु.

(नोट : पोस्टेज एवं डिलेवरी शुल्क अतिरिक्त)